

वैदेही

मैथिलीक सर्वोत्तम मासिक



VAIDEEHI
25 nP.

एक प्रति
चार
आना

अगस्त १९५८
२५ नवका पैसा

[बिहार सरकार द्वारा स्कूल, कालेज एवं पुस्तकालयक हेतु स्वीकृत]

सम्पादक

प्रो० श्रीसुरेन्द्रभा
'सुमन'

श्रीसुधांशु 'शेखर'
चौधरी

प्रो० श्रीकृष्णकान्त
मिश्र

एक प्रति २५

विशेषांक ५०

वार्षिक ३)

आजीवन ५१)

संरक्षक १२५)

श्रीकृष्णकान्तमिश्र

द्वारा दरभंगा प्रेस

कम्पनी (प्रा०) लि०

दरभंगामे मुद्रित

एवं प्रकाशित

प्राप्ति-स्थान

वैदेही समिति,

लालबाग, दरभंगा

कथा-यात्रा

मलाहक टोल : एक चित्र

श्रीमणीन्द्र

३०३

गुल्लीक यात्रा

श्रीश्यामानन्द

२६६

आलोचना

विद्यापतिक जीवनक ऐतिहासिक-

पृष्ठभूमि

डा० श्रीविमानबिहारी मजुमदार

२८५

कविता

श्रद्धाञ्जलि

२८४

मिथिला-मैथिल-मैथिली

श्रीवेदमित्रमिश्र

२६८

मुख - चित्र: गत अखिल भारतीय मैथिली साहित्य सम्मेलन (१९५६) क दरभंगा अधिवेशन मध्य स्वयंसेवक-दलक अधिकारी स्व० विश्वनाथमिश्र । एहि मेधावी युवकक आकस्मिक निधनसँ सम्पूर्ण मिथिला बड़ दुखी अछि । एकमात्र विधवा स्त्री छोड़ि एकर समस्त परिवार एही ग्रीष्मावकाशमे स्वर्गीय भै गेल । ई विट्ठोवासी प्रसिद्ध पंडित श्रीविकलमिश्रक बालक एवं मंगरौनीवासी श्रीमधुकान्तभाक जामाता छलाह । परमात्मा दिवंगत आत्माकेँ एवं हुनक समस्त शोक-संतप्त परिवारकेँ एहि बृहत विपत्तिकेँ सहन करवाक शक्ति प्रदान करथुन्ह ।

ग्राहक सभसँ

नम्र निवेदन अछि जे कृपया अविलम्ब अपन बाँकी चन्दा कार्यालयकेँ पठाबथु ।

—मन्त्री, वैदेही समिति, दरभंगा

श्रद्धाञ्जलि

हा, हा ! विश्वेश्वरसिंह राजा ।
दुःख कथा कऽ गेलौँ ताजा ॥
एक दुःखसौँ दूर न भेलौँ ।
ताधरि एक अहूँ दऽ गेलौँ ॥
पाथर हृदय किए नहि फटलें ?
असह वेदना कोना सहलें ?
रौ दैव ! दुर्दिवस देखौलें ।
राजाकें तों सरङ्ग पठौलें ।
स्वर्गवास राजाकें भेलनि ।
अनधीरज सभकाँ भऽ गेलनि ।
कनइत छी मिथिला नर-नारी ।
हमसभ कोना धीरज धारी ।
'वेद' मन्त्र पढ़ने की होएत ?
घाइल हृदय स्वस्थ नहि होएत ।

—श्रीवेदमित्रमिश्र, इन्दौर

विद्यापतिक जीवनक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

डाक्टर श्री विमान विहारी मजुमदार

राजकृष्ण मुखोपाध्याय द्वारा लिखित युगान्तरकारी रचना जे १८७५ ई० मे बङ्गला-पत्र "बङ्ग-दर्शन" मे प्रकाशित भेल तहिपसँ विद्यापतिपर अनेको अनुसन्धान कएल जाए रहल अछि । किन्तु एखन धरि ओहि अमर कविक जीवनसँ सम्बद्ध मुख्य घटना सबहिक तिथि-निर्धारण करब सम्भव नहि भेल अछि । मिथिला पञ्जी अथवा ओकर अविवेचनात्मक अध्ययनमे वर्णित परस्पर विरोधात्मक कथन सभकेँ एहि तिथिक संदिग्धताक दोषारोपण कएल जाए सकइछ । जॉन बीम्स अपन लेख 'On the age and country of Vidyapati' (विद्यापतिक युग ओ देश) मे कहइत छथि (१) जे ओ निम्नाङ्कित वंशानुक्रमण पञ्जीमे पओलन्हि :

देवसिंह	१३५५ ई०	राज्यकाल	८१ वर्ष
शिवसिंह	१४४६ ई०	राज्यकाल	३३ वर्ष
रानी पद्मावती देवी	१४५० ई०	राज्यकाल	१३ वर्ष
रानी लखिमा देवी	१४५२ ई०	राज्यावधि	६ वर्ष
रानी विश्वास देवी	१४६१ ई०	राज्यावधि	१२ वर्ष
नरसिंह	१४७३ ई०	राज्यावधि	१२ वर्ष

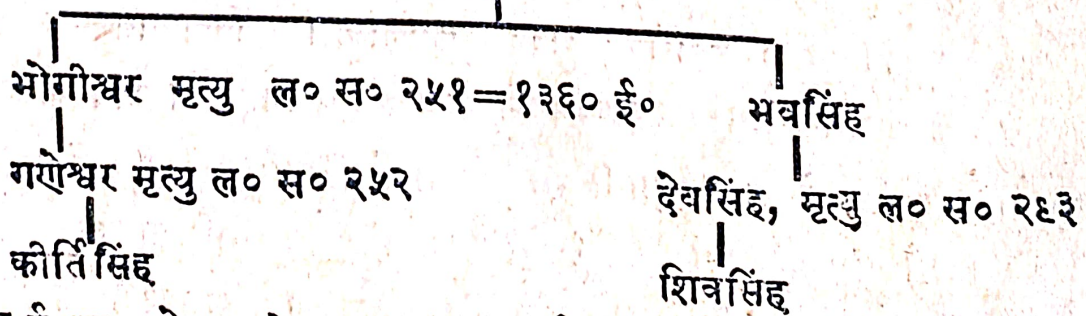
आगाँ ओ कहइत छथि जे 'शिवसिंहकेँ' तीन पत्नी रहथिन्ह—उपर्युक्त तीनू रानी, पंजीक अनुसार क्रमशः राज्य कएलन्हि, एवं हुनका लोकनिक बाद शिवसिंहक पतिओत नरसिंह राज्य कएलन्हि । विद्यापतिक विशुद्ध पदावलीक समालोचनात्मक अध्ययनसँ ई स्पष्ट भए जाइछ जे कवि लखिमा सुषमा, रूपिनि, मेधा, मधुमती ओ सोरमाकेँ शिवसिंह (२) क पत्नीक रूपमे चर्चा कएलन्हि अछि । १८८१-८२ मे ग्रियर्सन मिथिला जनश्रुतिक आधारपर ई कहलन्हि जे विश्वास देवी शिवसिंह (३) क पत्नी सभमेसँ रहथिन्ह, किन्तु कवि स्वयं अपन 'शम्भु वाक्यावली' ओ 'गंगा-वाक्यावली' मे कहइत छथि एवं विश्वास देवी शिवसिंहक भाइ पद्मसिंहक रानी रहथिन्ह । बीम्सक अन्वेषण पदसँ स्त्रीक नाम बुझि नेने हैतैक ।

१८८५ई० मे ग्रियर्सन 'विद्यापति एवं हुनक समकालीन' (Vidyapati and his contemporaries) नामक एक रचना Indian Antiquary (४) प्रकाशित कएलन्हि, जाहि मे ओ अयोध्या प्रसाद द्वारा उर्दूमे लिखित दरभंगाक इतिहाससँ निम्नाङ्कित वंशानुक्रम उद्धृत कएलन्हि :

भवसिंहक राज्यग्रहण	१३४८ ई०
देवसिंह राज्यग्रहण	१३८५ ई०
शिवसिंहक राज्यग्रहण	१४४६ ई०
लखिमा देवीक राज्य-ग्रहण	१४४८ ई०
विश्वास देवीक राज्यग्रहण	१४५८ ई०
द्रव्यनारायण, प्रसिद्ध नरसिंहदेव	१४७० ई०
हृदयनारायण, प्रसिद्ध धीरसिंह	१४७१ ई०
हरिनारायण, प्रसिद्ध भैरवसिंह	१५०६ ई०

ताही रचनामे ओ मिथिला पञ्जीपर आधारित ओइनवार अथवा सुगौना वंशक एक विशिष्ट वंशानुक्रम प्रकाशित कएलन्हि, किन्तु ताहिमे ई कहल गेल जे विद्यापतिक 'कीर्तिलता' गणेश रायक पिता भोगीश्वर निस्संतान छलाह । ग्रियर्सन स्वयं १८९९ ई० मे ओहि वंशानुक्रमक शुद्धि पकड़लन्हि जखन ओ १८८८ ई० मे दरभंगासँ प्रकाशित 'पुरुष परीक्षाक चन्दा' नामक संस्करणक पुच्छलिकासँ 'कीर्तिलता'क थोड़ेक अंशक अध्ययन कएलन्हि तखन ओ एहि प्रकारे वंशानुक्रमणिकाक तिथि (५) शुद्धि कएलन्हि :

कामेश्वरठाकुर



एतए ई ध्यान देवाक योग्य अछि जे ग्रियर्सन ११०६ई० केँ लक्ष्मण सम्बत्क प्रारम्भिक वर्ष मानलन्हि । कोलहान (६) ई सिद्ध कय देने छथि जे लक्ष्मण सम्बत् १११९ ई० सँ प्रारम्भ भेल, एवं अनेको विद्वान एहि विषयकेँ स्वीकार कएने छथि ।

कीर्तिलताक रचना-काल

श्रीनगेन्द्रनाथगुप्त विद्यापति पदावलीक प्रथम संस्करणक (१६०६ ई०) क भूमिकामे ई कल्पना करैत कहैत छथि जे यदि हमरा लोकनि २४३ लक्षमण सम्बत्मे शिवसिंहक जन्म मानि ली त' विद्यापतिक जन्म २४१ लक्षमण सम्बत्मे (७) कहल जाए सकइछ । ई कल्पना बादमे बहुतो विद्वान द्वारा एक ऐतिहासिक सत्यक रूपमे स्वीकृत भेल अछि । उदाहरणार्थ, डा० बाबूराम सक्सेना कीर्तिलता (८)क अपन भूमिकामे ओ म० म० डा० श्रीउमेशमिश्र अपन विद्वतापूर्ण कृति 'विद्यापति ठाकुर' मे ई मानलन्हि अछि जे विद्यापतिक जन्म २४१ लक्षमण सम्बत् (१३६० ई०) मे भेल एवं ओ 'कीर्तिलता' क रचना बीस वर्षक वयसमे अर्थात् १३८० ई० मे कएलन्हि । विद्यापति अपन एहि कृतिमे, कोना कीर्तिसिंह अपन पिता गजेश्वरक हत्याक बदला लेलन्हि आ जैनपूरक इब्राहिमशाहक सहायतासँ मिथिलाक अपन पैत्रिक गद्दी पुनः प्राप्त कएलन्हि तकर वर्णन करइत छथि । इब्राहिम 'कीर्तिलता' मे "पतिशाह" अथवा सम्राटक रूपमे वर्णित अछि । ई सर्वमान्य अछि जे ओ जैनपूरक गद्दीपर १४०२ ई० मे बइसल । जँ विद्यापति १३८० ई० मे 'कीर्तिलता' लिखलैन्हि त' कोना ओ इब्राहिमशाहकेँ जैनपूरक शासकक रूपमे वर्णन कएलन्हि ? पंडित शिवनन्दन ठाकुर अपन महाकवि विद्यापति (१०) मे एहि प्रकारक असंगत निर्णयपर पहुँचलाह जखन ओ ई कहलन्हि जे विद्यापतिक जन्म लगभग २३२ ल० सं० अर्थात् १३५१ ई० मे भेल एवं २५२ ल० सं० वा १३७१ ई० मे कीर्तिलता लिखलन्हि । वाल्मीकि रामचन्द्रक जन्मसँ पूर्वे रामायण लिखने होयताह, किन्तु विद्यापति इब्राहिमक गद्दीपर एबासँ ३१ वर्ष पहिनहि ओकरा सम्राटक रूपमे वर्णन नहि कए सकल होयताह । 'कीर्तिलता' कहइछ जे गणेश राय क हत्या कएल गेल—“लखन सेन नरेश लिहिया जवे पख्खा पञ्चवे” । म० म० हरप्रसाद शास्त्री 'जवे' शब्दक अर्थ 'जखन' बुझलन्हि आ 'पख्खा पञ्चवे' क अर्थ २५२ ल० सं० । (११) कीर्तिलतामे वर्णित घटनाक्रमक तिथिकेँ इब्राहिम (१२) क सिंहासनारूढ़क प्रयोजनार्थ डा० काशीप्रसादजायसवाल विद्वतापूर्ण ढंगसँ 'जवे' शब्दक अर्थ ५२ लेलन्हि (ज—५, वे—२) ओ तकरा “पख्खा पञ्चवे” वा २५२ मे जोड़ि देलन्हि, अर्थात् $२५२ + ५२ = ३०४$ लक्षमण सम्बत् १४२३ (१३) ई० ।

यदि डा० जायसवालक तर्क शुद्ध अछि, ई कहल जाय सकइछ जे ई तिथि लिखबाक एक अप्रचलित ढंग अछि। तथापि यदि हम ३०४ ल० स०केँ गणेशक हत्याक तिथि मानि लइत छी जे वंशक तृतीय राजा छलाह त वंशक आठम राजा शिवसिंह २६१ ल० स० मे महाराज कोना कहल गेलाह—जाहि तिथि मे विद्यापति (१४) आजासँ “काव्यप्रकाशविवेक” क हस्तलिपिक लेख उतारलन्हि ? तएँ, हमरा सभकेँ गणेशक हत्याक तिथि २५२ ल० स० अथवा १३७१ ई० मानि लेब उचित थोक। किन्तु तखन जौनपूरक इब्राहिम साह जे कीर्तिसिंहकेँ तिरहुतक सिंहासनपर बइसओलन्हि तकरा एहि तिथिसँ कोना मिलाओल जाय ?

ई सहजहि मिलाओल जाय सकइछ यदि हम गणेशक हत्याक बाद तिरहुतमे घटित घटना सभहिक वर्णन जे ‘कीर्तिलता’ मे अछि तकरा ध्यानपूर्वक देखी। विद्यापति लिखइत छथि—“राजाक हत्या भेलापर युद्धक हेतु चीत्कार होमय लागल एवं समस्त संसार दुःखसँ परिपूर्ण भय गेल। ठाकुर सभ ठक भए जाइत गेलाह। चोर चुशारकेँ सम्पत्तिशाली अट्टालिका सभ पइर लागि गेलइक। बहिया सभ अपन मालिककेँ सतबध लागल। धर्म सन्देह एवं कठिनताक गर्त मे डूबि गेल। दुष्ट सभ भलमानुसक मालिक बनि गेल। उचित न्याय कएनिहार केओ ने रहल। ऊँच ओ नोच जाति सभ अपनामे वैवाहिक सम्बन्ध जोड़य लागल तथा निम्न कोटिक लोक उच्चकोटिक लोक केँ पीटय लागल। कतहु एकोटा साहित्यिक लोक नहि रहल एवं भद्र व्यक्ति सभ भिखमङ्गा भए जाइत गेलाह आ’ घरेघरे शिचाक खोजमे बउआउ लगलाह। जखन राजा गणेश स्वर्गरोहित भेलाह तऽ तिरहुतमे जे किछु नीक छल से सभटा बिलाए गेल।” (कीर्तिलता, परिच्छेद-२)। ई सभटा थोड़वे दिनमे भए गेल होएत से सम्भव नहि। यदि हम ई मानि ली जे गणेशक दुनू बालक वीरसिंह हत्याक समयमे नेना छलाह, आ’ जखन एहि घटनाक २२-३३ वर्षक उपरान्त इब्राहिम शाह एक विशिष्ट साम्राज्यपर अपन प्रभुत्व स्थापित कएलक, ओ दुनू गोटे जौनपूर गेलाह आ’ अपन अधिकार प्राप्त करवाक हेतु इब्राहिमक साहाय्य प्राप्त कएलन्हि तँ एहि दुनू ज्ञात तिथि अर्थात् १३७१ ई० गणेशक हत्याक तिथि एवं इब्राहिमक सिंहासनावृद्ध होखाक तिथि १४०२ ई० मे कोनो प्रकारक विवाद नहि रहत।

बहुतो विद्वानक ई मत अछि जे कीर्तिलता, विद्यापतिक प्रथम कृति थोक, एवं ‘कीर्तिलता’मे अवहट्ट भाषाक माध्यमसँ प्रयोग करवाक बाद तखने मैथिलीमे गीत लिखब प्रारम्भ कएलन्हि। किन्तु ई आश्चर्यक विषय थोक जे ओएह विद्वान कहइत छथि जे सुलतान गयासुद्दीन जकरा विद्यापति अपन एक कविता (राग तरङ्गिणीक ५५म पृ० एवं नगेन्द्रनाथगुप्तक संस्करणक २६८म पृ०)

समर्पित कएलन्हि से १३७९ ई० मे गरि गेल, अर्थात् हुनकहि लोकनि द्वारा कीर्तिलताक रचनाक निर्धारित तिथि (१५) सँ ७ वर्ष पूर्व । ओ लोकनि अवि-
वेचनात्मक रूपसँ १८१९ ई० मे प्रकाशित 'बङ्गालक इतिहास' (History of Bengal) मे स्टुवार्ट (Stewart) द्वारा कथित बङ्गालक सुल्तान गिया-
सुद्दीन आजमक तिथि स्वीकार कए लेलन्हि अछि । डा० एन० के० भट्टा-
सली जे बङ्गालक प्राचीन स्वतन्त्र सुल्तान समहिक मुद्रा (Coins) क
अध्ययन कएने छथि, ई सिद्ध कए देलैन्हि अछि जे केओ १४१० ई० सँ पूर्व
कथमपि नहि स्वर्गीय भेल होयताह कारण हुनको अनेको कैद्यापर ८१२ हि०
तथा ८१३ हि० आदि तिथि अङ्कित छन्हि । डा० भट्टासालीक कथ्य छैन्हि जे
गयासुद्दीन मुल्तमे अपन पिता सिफन्दरक हत्या कएलक एवं ७६५ हि० अर्थात्
१३६२ (१६) ई० मे सुल्तान आजमशाहक उपाधि-ग्रहण कएलक । ओकरा
प्रसङ्ग ई कहल जाइछ जे ओ फारसक प्रसिद्ध कवि हफीजके बङ्गाल अएबाक
हेतु आमन्त्रित कएने रहैक, किन्तु ओ कवि आमन्त्रण अस्वीकृत कए देलकैक
एवं ओकरा अपन एक गोट कविता समर्पित केलकैक । एहिसँ ई स्पष्ट होइछ
जे ओ कविक पोषक छल, आ ई एहिमे कोनो आश्चर्य नहि जे ओ विद्यापति
के अपन दरबारमे रखने होइन्ह । विद्यापति कीर्तिसिंहक मिथिलाक सिंहा-
सनक पुनः प्राप्तक उपरान्त, ओकर दरबारमे रहबाक इच्छुक नहि भेल
होएताह । तब ई अनुमान कएल जाए सकइछ जे विद्यापति ओ कविता गया-
सुद्दीनके १३६२ ई० एवं १४१० ई० क मध्य कोनो समयमे समर्पित कएने
होएथिन्ह जखन कि मिथिला अराजकताक जालमे फँसल छलि; आ' ई जे
कीर्तिसिंह अपन पैत्रिक राज्य १४०२ ई० क अनेको वर्ष बाद प्राप्त कएलन्हि
जाहि वर्ष जौनपूरक इब्राहिमशाह सिंहासनारुढ़ भेलाह; आ' ई जे कीर्तिलता
मिथिलामे ओइनवार वंशक पुनर्स्थापनक उपलक्ष्यमे लिखल गेल होएत ।
यदि ई अनुमान मान्य अछि त एहि सङ्ग इहो जे कीर्तिलता कविक प्रथम
कृति नहि छल । कीर्तिलताक आन्तरिक प्रमाण सेहो एहि कथ्यक पुष्टि करइछ
कारण विद्यापति एहिमे निर्विकार शब्दे 'यशस्वी (१७) होएबाक गर्व करइत
छथि । यदि ओ अप्रसिद्ध कवि रहथि एवं कीर्तिलता हुनक प्रथम कृति
रहितन्हि त' ओ कथमपि एहि प्रकारक गर्व नहि करितथि ।

विद्यापति मिथिलाक ओहि राजा लोकनिक नाम लिखलन्हि अछि जनिक
अधोनस्थ भए ओ अपन रचना कएलन्हि । कीर्तिलतामे (पृ० ४-५) ओ
कामेश्वरक चर्चा करइत छथि, एवं हुनक पुत्र गणेश राय वा गान राय (जे
हरप्रसादशस्त्री एवं बाबूरामसक्सेना द्वारा गणेश्वर कहल गेल, किन्तु
जकर समोच्चारण गगनेश वा गगन होएबाक चाही) एवं हुनक तीन पुत्र
वीरसिंह, कीर्तिसिंह तथा राजसिंहक सेहो अपन रूप परीक्षामे विद्यापति

भवदेवसिंह तनिक पुत्र देवसिंह एवं तनिक पुत्र शिवसिंहक नाम लिखइत छथि । अपन शम्भुवाक्यावली वा शैव सरवस-वसरमे ओ भवसिंह, देव आ' शिवसिंह ओ हुनक भ्राता पद्मसिंह एवं हुनक पत्नी विश्वासदेवीक चर्चा करइत छथि । हुनक 'विभागसार' मे भवेश, हुनक पुत्र हरिसिंह एवं हुनक पुत्र दर्पनारायणक नाम लिखल अछि । अपन "दुर्गामक्तिरंगिणी" मे विद्यापति नरसिंह एवं हुनक तीन बालक धीरसिंह, भैरवसिंह तथा चन्द्रसिंहक चर्चा करइत छथि । एहि प्रकारे' कामेश्वरक परिवारक तेरह पुरुष एवं एक स्त्रीक नाम विद्यापतिक पुस्तक सभ हमरा सभकेँ भेटइछ । किन्तु विद्यापति ई नहि कहइत छथि जे भवदेवसिंहकेँ कामेश्वरसँ वा नरसिंह केँ शिवसिंह सँ कोन सम्बन्ध छलन्हि ।

जनश्रुति एवं विद्यापतिक आधारपर हम सभ आव ओहि व्यक्ति सभक वंशानुक्रम बनाए सकइत छी जनिक नाम कवि कहलन्हि अछि । नामक वाम अङ्कित अङ्क कालक्रम बोध करइछ :

(१) कामेश्वर

(२अ) भोगेश्वर

(२आ) एवं (६) भवसिंह

हरिसिंह

(३) गणेशराय

(७) देवसिंह

(११) नरसिंह

(४) वीरसिंह (५) कीर्तिसिंह (८) शिवसिंह (९) पद्मसिंह

(प्रायः राज्यग्रहणसँ पूर्व समाप्त) (१०) विश्वास देवी

(१२) धीरसिंह

(१३) भैरवसिंह

(१४) चन्द्रसिंह

शिवसिंहक पितामहक नाम 'पुरुष परीक्षा'मे भवदेवसिंह एवं शम्भु-वाक्या-वलीमे भवसिंह अछि । ई बुझि पड़इछ भवेश एवं विभागसार दुहु एके व्यक्तिक बोधक थीक । नरसिंहदेवक (१८) कन्दह अभिलेखमे डा० जाय-सवालकेँ नरसिंहक पिताक नाम आदि अक्षर नहि भेटलन्हि । हुनका.....

रसिंह देव मात्र भेटलन्हि एवं हराएल नामान्तर (ह) केँ हस्तलिपिसँ मिलाओल गेल” । किन्तु हस्तलिपि कहइछ जे नरसिंहक पिता विद्यापति ‘विभागसार’ मे मिश्र मिश्रक ‘विद्याचन्द्र’ मे ‘हरिसिंह’ कहल गेलाह अछि एवं परम्परागत पक्षीमे सेहो हुनक नाम हरिसिंह अछि । हरिसिंह कहियो राज्यग्रहण नहि कय सकलाह, कारण विद्यापति अपन ‘विभागसार’ मे भवेश एवं दर्पनारायणकेँ राजा कहि सम्बोधन कएलन्हि अछि किन्तु हरिसिंहकेँ नहि । तहिना, कन्दह अभिलेख सेहो भव आर नरसिंहकेँ राजाक रूपमे चर्चा केलक अछि, किन्तु हर वा हरिसिंहकेँ मात्र “एक विचारक मन्त्रक प्रसंग, एवं योद्धा”क रूपमे । विद्यापतिक पोथी एवं गीत सभमे ओइनवार अथवा सुगौना वंशक कीर्तिसिंहसँ भैरव धर्म नओ पोषकक चर्चा अछि । विश्वक कोनो देशक कोनो कविकेँ ई सौभाग्य वा दुर्भाग्य प्राप्त नहि छन्हि जे एके वंशक एतेक राजा लोकनिकेँ अपन रचना समर्पित करथि । संक्षिप्त वंशानुक्रमक एक अवलोकन ई स्पष्ट कए देत जे ओ राजा लोकनिक चारि पीढ़ी धरि पुस्तकक रचना कएलन्हि । किन्तु कीर्तिसिंहक देहान्तक उपरान्त राजमुकुट भवसिंह धारण कएलन्हि जे गत राजाक पितामहभ्राता छलाह । ई त पहिनहि देखल गेल अछि जे कीर्तिसिंह १४०२ ई० वा २८३ ल० स० सँ पूर्व सिंहासनारूढ़ नहि भेल होएताह । शिवसिंह १४१२ ई० वा २८३ ल० स० पर गद्दीपर आएलाह । तेँ कीर्तिसिंह, भवसिंह, देवसिंह एही दस वर्षक अल्पावधिमे राजा भेलाह । ई असंभव नहि लगइछ कारण भ्राताक पौत्रक बाद राजा बनबाक समय भवसिंह निश्चय भुनकुट वृद्ध रहल होएता । तनिक पुत्र देवसिंहक सेहो वयोवृद्ध रहल होएताह, कारण जखन भवसिंहक बाद ओ त’ अपन पुत्र शिवसिंह के अपना स्थानपर शासन करबाक आज्ञा देलथिन्ह । एहिसँ ई स्पष्ट भय जाइछ जे २६१ ल० स० मे शिवसिंह महाराज किएक कहल गेल अछि यद्यपि हुनक राज्यारोहण २६३ ल० स० मे भेल । विद्यापति देवसिंह के चारि गोटा कविता समर्पित कएलथिन्ह अछि ।

यदि हम भवसिंह एवं देवसिंहक अल्पराज्यावधि छोड़ि दी त’ हम देखइत छी जे विद्यापतिक साहित्यिक कार्यकलाप राजालोकनिक दुइ पीढ़ी धरि भेल कारण, कीर्तिसिंह, शिवसिंह, पद्मसिंह एवं नरसिंह पितृपौते छलाह तथा धीरसिंह ओ भैरव सिंह नरसिंहक बालक छलाह ।

विद्यापतिक एक गीत जाहिमे देवसिंहक मृत्यु एवं शिवसिंहक राज्यारोहणक तिथिक चर्चा अछि, बिनोद बिहारी काव्यतीर्थ द्वारा अन्वेषित भेल एवं १३०७ वि० सं० मे बङ्गोय साहित्य परिषद् पत्रिकामे प्रकाशित भेल— नगेन्द्रनाथ गुप्तक विद्यापतिक संस्करण (जाहिमे आ बिना कोनो अभास-ज्ञापनक ५३१पृ० मे छपल अछि) सँ नओ वर्ष पूर्व । चैत्र वदि पष्ठी २६३ ल० स० अथवा १३२४ शक स० केँ कोना देवसिंहक देहान्त भेल एवं मुसलमान सभ राजधानीपर आक्रमण कएलक, तथा कोना शिवसिंह आक्रमणकर्ताक परास्त कएलन्हि एवं कोना अपन पिताक श्राद्ध-कर्म सम्यक् कएलन्हि तकर बर्णन ओहिमे अछि । ज्योतिष गणनाक अनुसार मतमोहन चक्रवर्ती ई सिद्ध कएलन्हि जे चैत्र वदि पष्ठी (१६) १३२४ शकमे वृद्धस्पतिकेँ पड़इछ १३३४ मे नहि । ई कहल गेल अछि जे एहि प्रकारक अशुद्धि शकमे तिथिक चर्चा करइत जे गीतक दोसर पंक्ति अछि ताहिमे “कर” शब्दकेँ “पुर” पढ़ल जाए कारणे अछि । कीलहार्न (Kielhorn) एवं डा०जायसवालक अन्वेषण सेहो सिद्ध करइछ जे २६३ ल० स० १३३४ शकक वरोबरी भेल, १३२४ शकक नहि । यदि ओ गीत आधुनिक नहि जाए त’ शिवसिंहक सिंहासनारूढ़ होएबाक तिथि २३ मार्च, १४१३ ई० मानल जाए सकैछ ।

मिथिलाक परम्परानुसार शिवसिंहक राज्यावधि मात्र ३ वर्ष ६ मास अछि । यदि शिवसिंह १४१३ ई० मे गद्दीपर बैसलाह त’ ओ अश्वय १४१६ ई० क अन्त धरि राज्य कएने होइताह । विद्यापति अपन ‘लिखनावली’ पुरादित्यक पोषणमे लिखलन्हि, जे, ओ अन्तिम गीतक अनुसार सप्तरीक शासक अर्जुन केँ मारलन्हि । एहि अर्जुनकेँ विद्यापति अपन पाँच गोठ गीतमे अपन पोषण मानलन्हि अछि । चन्द्रभा एक जनश्रुतिक उल्लेखक करैत कहैत छथि जे सम्राटक द्वारा शिवसिंहक गिरफ्तारीक उपरान्त विद्यापति एवं लखिमा देवी नेपालमे सप्तरीक राजाक शरण लेलन्हि । ‘लिखनावली’ मे थोड़ेक पत्रक नमूनाक संग्रह अछि जाहिमेसँ अधिक पर २६६ ल० स० अर्थात् १४१८ ई०क तिथि अङ्कित अछि । तखन त’ १४१७ ई० सँ १४१८ ई० धरि विद्यापति अपन देशसँ ‘फेरार’ रहल होइताह ।

विद्यापतिक जीवनक दोसर निश्चित तिथि ३०६ ल० स० अर्थात् १४२८ ई० अछि जे स्वयं विद्यापतिक द्वारा उद्धृत भागवत पुराणक एक हस्तलिपिक अन्त मे अङ्कित अछि । विद्यापति नरसिंह दर्पनारायणक संरक्षणमे 'विभागसार' लिखलन्हि । भागलपुर जिलाक (२०) मधेपुरा सवडिवोजनक कन्दह नामक स्थान मे एहि नृपक एक अभिलेख डा० जायसवाल प्राप्त कएलन्हि । अभिलेखक तिथि शक वर्ष 'सरस्व मदन' अछि । 'सर' सँ तात्पर्य अछि पाँच, 'अस्व' सँ सात ओ 'मदन' सँ तेरह (संभवतः मदन - त्रयदसीक आधारपर) । प्रथानुसार अङ्कक गति बाम दिशि अछि, तब एकर अर्थ १३७५ शक १४५३ ई० ३३४ ल० स० होएवाक चाही । किन्तु दुइ गोटा निश्चित तिथि क्रमशः ३२१ ल० स० (१४४० ई०) एवं भाद्र ३२७ ल० स० (१४४७ ई०) सेतुदर्पनी एवं महाभारतक (२१) कर्णपर्वक हस्तलिपि नरसिंहक पुत्र धीरसिंहकेँ सिंहासनारूढ़ शासक वर्णित करइछ । डा० जायसवाल विचारलन्हि जे यदि पुत्र ३२१ ल० स० मे राज्य करइत छलैक त' पिता तेसर वर्ष बाद अर्थात् ३३४ ल० स० मे कोना राज्य कएने हेतैक ! तब ओ प्रचलित प्रथा 'अङ्कस्य वामागति' केँ अन्ठाए देलन्हि, आ ओहि वर्षकेँ १३५७ शक, १४३५ ई० वा ३१६ ल० स० बुझलन्हि । अस्तु, हमरा सभकेँ अङ्क गणनाक सिद्धान्तक उल्लंघन करवाक प्रयोजन नहि अछि । पिताक अमलमे शिवसिंह विद्यापति द्वारा कहल जाइत छलाह तब इहो सम्भव अछि जे धीरसिंह सेहो अपन पिता नरसिंहक अमलमे महाराज कहल गेल छलाह । ई अनुमान 'दुर्गा-भक्ति-तरङ्गिणी'क प्रारम्भिक पंक्ति द्वारा पुष्ट भए जाइछ, जकरा सभ विद्यापतिक संस्कृतमे अन्तिम कृति मानैत छथि । तेसर प्रारम्भिक कविता नरसिंहदेवकेँ वर्तमान काल 'अस्ति' मे प्रस्तुत करइछ आ एहिसँ शरदचन्द्र मित्र अपन 'विद्यापति पदावलीक परिचय' (Introduction to Vidyapati Padavali) (२२) मे ई निष्कर्ष निकाललन्हि जे ओ नरसिंह देवक राज्यकालमे लिखल गेल । तत्पश्चात् जे अन्वेषण भेल तदनुसार ओ धीरसिंहक अमलमे लिखल गेल अछि । एहि कृतिक शब्द - ध्वनि एकरा धीरसिंहक समयक कहइछ जेना 'गंगावाक्यावली'क शब्द-ध्वनि विश्वास देवी (२३) क समयक लगइछ एवं 'दानवाच्यावली'क शब्दध्वनि नरसिंहक पत्नी धीरमती (२४) क समयक ।

यदि नरसिंहक कन्दह अभिलेखक तिथि जे हमरा सभ शिष्य कएल अछि जे
विद्यापति कसँ कम शक १३०५ आथवा १४५१ ई० धरि जीवित छलाह ।
नगेन्द्रनाथगुप्त अज्ञात सूत्रसँ एक पद (पृष्ठ ५३३) प्रकाशित कएलन्हि
जाहिमे विद्यापति वर्णन करइत छथि जे बत्तीस वर्षक बाद ओ शिवसिंहक
स्वप्नमे देखलथिन्ह । जाहिसँ गुप्त महोदय ई मुक्तान्हि जे विद्यापति ३२६
ल० स० अर्थात् १४४८ ई० धरि जीवित छलाह । शिवनन्दन ठाकुर एहि पद
केँ विशुद्ध मानलन्हि एवं बहुत उचित रूपेँ ई तर्क उपस्थित कएलन्हि जे
विद्यापति एहि स्वप्नक आठ मासक अन्तर्गत निधित स्वर्गीय भय गेल होएताह
(पृ० ३८) ।

विद्यापतिक मृत्यु-दिवस १४४८ ई० मे कहइत नगेन्द्रनाथ गुप्त स्वयं अपनहि
बातकेँ, पद संख्या ४८४, ३४ एवं ४४ क अपन अर्थ द्वारा खंडन करइत छथि ।
हुनक संग्रहक पदसँ ४८४ हुसेन शाहक चर्चा करइछ, जकरा गुप्त महोदय
बङ्गालक पठान सुल्तानक रूपमे परिचय दैत छथि । अस्तु, हुसेनशाह बङ्गालक
गद्दीपर १४६२-६३ ई० सँ पूर्व नहि बैसल । गुप्त महोदय ई स्वीकार करइत
छथि जे सत्रहम शताब्दीक लोचन कवि द्वारा सम्पादित “राग तरङ्गिणी”
ओहि सूत्र सभमेसँ एक अछि जाहिसँ ओ पद संख्या ४८४ क अन्वेषण
कएलन्हि । किन्तु राग - तरङ्गिणी (२५) मे ओहि कविताक रचयिताक
नाम यशोधर नवकवि शेखर अछि । तब हुसेनशाहक राज्यकालमे विद्या-
पतिक जीवित रहबाक प्रश्न नहि उठइछ । पुनः गुप्तजी, पदसंख्या ३४ एवं
४४ क जे हुनका तात्पर्य लगलन्हि तदनुसार विद्यापतिकेँ हुसेनशाहक बालक
नसरत शाहक (२६) राज्यकालमे सेहो जीवित मानइत छथि, एवं एहि प्रकारेँ
कविक १५४ वर्षक दीर्घायु प्रस्तुत करइत छथि यद्यपि ओ अपन भूमिकामे
कहइत छथि जे यद्यपि नब्बे वर्षक अवस्थामे स्वर्गीय भेलाह । नगेन गुप्तक
संस्करणक पद संख्या ३४ कोनो कविशेखरक भनिता - युक्त अछि जनिह
लोचन कवि विद्यापतिक रूपमे परिचय दइत छथि । किन्तु विद्यापतिक कोनो
आन विशुद्ध पदमे हमरा लोकनि विद्यापतिकेँ कविशेखरक उपाधिक प्रयोग
करइत देखइत छिअन्हि । एहि पदमे इङ्गित राय नसरतशाह, हुसेनशाहक
बालक नसरतशाह (२७) से विद्यापतिक मृत्युर आध शताब्दीक अनन्तर गद्दी

पर बैसल प्रायः सएह थोक। † हरप्रसाद शास्त्रीक विचार छन्हि जे ई कवि-
शेखर बङ्गाली कवि राय शेखरकेँ छोड़ि आन केओ नहि थिकाह (Intro-
duction to Kirtilata P. 28)। पद संख्या ४४ क अपद टीकामे गुप्त
महोदय कहइत छथि जे बङ्गालीक पद्य-संग्रहक 'कीर्तानन्द' मे नसीरशाहक
चर्चा करइत जे एकर भनिताक अर्थ होइछ सएह मौलिक एवं विशुद्ध अर्थ
अछि। ओहि पद-विशेषकेँ ओ बङ्गालेक पद्य-संग्रह सभमे पओलन्हि
आओर कतहु अन्यत्र मिथिलामे नहि। यदि हमरा लोकनि एहि पदकेँ विद्या-
पतिक विशुद्ध रचना मानि ली, त' नसीरशाहकेँ नसीरखाँ जे बङ्गालक
गद्दीपर नसीरउद्दीन महमदक उपाधिसँ बइसल एवं १४५६ ई० धरि राज्य
कएलक। नसीरखाँकेँ नसीरशाह बुझल जाए सकइछ, किन्तु राय नसरत
शाह कथमपि ओ नहि भए सकइछ।

एहि सम्बन्धमे ई ध्यान देबाक योग्य अछि जे यद्यपि कीर्तिलता कीर्तिपताका
भू-परिक्रमा एवं पुरुष परीक्षा छोड़ि आ सभ पोथी विद्यापति शिवसिंहक
मृत्युक उपरान्ते लिखलन्हि, तथापि, कवि कोकिलक बहुत थोड़े एहन गीत भेट-
इछ जाहिमे शिवसिंहक बादक मिथिलाक राजा लोकनिक नाम होइन्ह।
शिवनन्दनठाकुरक संकलनमे एकेटा एहन गीत (सं० २५) अछि जाहिमे
विश्वास देवीक पति पद्मसिंहक चर्चा अछि। गुप्तजीक संग्रहमे ई गीत
नहि भेटइछ।

रागतरङ्गिणीमे एक गोट गीत (पृ ८०५) अछि जाहिमे 'कंश-दलन-नारायण
सुन्दर'क चर्चा अछि, जे धीरसिंहक कोनो विरुद्ध वा विशेषण भय सकइछ,
जकरा विद्यापति अपन दुर्गाभक्तितरङ्गिणीमे 'कंश - दलन - प्रत्यक्ष - नारायण'
क रूप मे लिखइत छथि। राघवसिंह एवं रुद्रसिंहक चर्चा करइत जे गीत
सभ अछि ताहिसँ कोनो निष्कर्ष निकालब उचित नहि होएत, कारण ई गीत
सभ हालहिमे जनश्रुतिक आधारपर संगृहीत भेल अछि आ' तब ई सभ

† म०म० डा० श्रीउमेशमिश्र (पृ० ५६-५७) एहि पदक आधारपर ई मानइत छथि जे विद्यापति
१५०० ई० धरि निश्चय जीवित छलाह। हुनक ई मति छन्हि जे विद्यापति गद्दीपर बइसबासँ
१८ वर्ष पूर्व नसरत शाहकेँ राय अथवा राजाक रूपमे चर्चा करइत छथि। ई व्याख्या
सन्तोषजनक नहि।

विद्यापतिक विशुद्ध रचना नहिषो भय सकइत छन्हि । एहिसँ ई निष्कर्ष निकालब उचिते जे विद्यापतिक काव्य-शक्तिक प्रवाह हुनक मित्र एवं पोषक शिवसिंहक मृत्युक बाद लगले सुखाए गेल, आ' कवि विद्वतापूर्ण स्मृति रचना मे अपन जीवन बितबय लगलाह ।

एहि लेखमे ई चेष्टा कएल गेल अछि जे विद्यापति साहित्यिक जीवन 'कीर्तिलता' क रचनासँ बहुत पूर्वे नहि प्रारम्भ भेल जे १४०४-५ ई० सँ पहिने नहि लिखल गेल होएत । हुनक अन्तिम कृति 'दुर्गा-भक्ति-तरङ्गिणी' नरसिंहदेवक जीवनकालमे लिखल गेल जे एहि पोथीक रचना कालमे एतेक वृद्ध भऽ गेल छल होएताह जे राज्य-भार वहन करइक योग्य नहि रहल होएताह किएक तऽ पुत्र धीरसिंहकेँ एहिमे महाराज कहल गेल छन्हि । धीर सिंह ल० स० ३२१=१४४० ई० एवं ल० स० ३२७=१४३७ ई०मे सेहो महाराज कहल गेल छथि । किन्तु नरसिंह कमसँ कम १४५३ ई० धरि जीविते छलाह । जहाँधरि साहित्यिक कार्यसँ सम्बन्ध अछि, विद्यापति पन्द्रहम शताब्दीक पूर्वार्द्धमे कवि एवं विद्वानक रूपमे प्रसिद्ध बुझल जाए सकइत छथि । †

† अ० भा० प्राच्यविद्या सम्मेलनमे (१९४८) समर्पित एवं साभार प्रकाशित ।
चिन्हित संख्या सभक सन्दर्भ :

1. John Beams—Indian Antiquary, Vol. IV., Oct. 1875, p. 299.
2. Majumdar, B. B.—J. B. O. R. S., Vol.—XXVIII, 1942 Part IV
3. Grierson—Chrestomathy, 1881-82 A. D.
4. Grierson—Indian Antiquary, Vol. XIV, 1885, July p. 187.
5. Grierson—Indian Antiquary, 1899, March, p. 57.
6. Kielhorn—Indian Antiquary, 1890, p. 7.
7. Nagendranath Gupta—Vidyapati Thakurer Padavali (Bengali)—1909, p. 2.
8. Dr. Baburam Saxena—Kirttilata (Nāgari Prachārani Granthmala Alld. 1929).
9. Mm. Dr. Umesha Misra—Vidyapati Thakur (Hindustani Academy, 1937—p. 36)
10. Shivanandan Thakur—Mahakavi Vidyapati (Pustak Bhandar, Laheria sarai—1941)

11. Mm. Harprasad Shastri—Kirttilata
12. The Cambridge Shorter History of India, p. 262-63.
13. K. P. Jayswal—J. B. O. R. S., Vol. XIII, p. 299
14. India Govt. Ms. of Kavyaprakash Viveka, fol. 117a.
15. N. Gupta—Vidyapati Thakurer Padavalim Annotation to Poem No. 288.
M.m. Dr. Umesha Mishra—Vidyapati Thakur, p. 47.
16. N. K. Bhattasali—Coins and chronology of the early independent Sultans of Bengal
17. Vidyapati—Kirttilata, introductory lines
18. J. B. O. R. S., Vol. XX, 1934. p. 17
19. J. A. S. B. 1915.
20. J. B. O. R. S. Vol. XX—pp. 15.-19
21. Ibid. Vol. X. p. 42.-43
22. Sarda charan Mitra—Vidyapati Padawali 1285 B. S. —i e., 1878-79 A. D. edition.
23. A descriptive catalogue of Manuscripts of Mithila, Vol. 1, p. 90.
24. Ibid. p. 205.
25. Ragatarangini, p. 67.
26. Indian Historical Quarterly, 1947. N. B. Roy's article

डाक्टर विमानबिहारीमजुमदार

द्वारा

सम्पादित

विद्यापति

सुन्दर भूमिका सहित एवं अद्यावधि उपलब्ध समस्त पद सभक

एक ठाम संकलन : मूल्य १५ टाका मात्र ।

पृ० सं० ६०० ड० क्र० ।

वितरक : मन्त्री, वैदेही समिति, दरभंगा

मिथिला-मैथिल-मैथिली

श्रीवेदमित्रमिश्र

बुझल सुझल अछि कम्मे सम ।
तइओ किछु सुनबइ छी हम ।१।
क्षमा करब हमरा सब भाय ।
प्रार्थी छी मस्तक नमराय ।२।
माय मैथिली देखु असीस ।
पंक्ति सुनाबी हम दस - बीस ।३।
मिथिला हमर ज्ञान भण्डार ।
विद्या खानि विदित संसार ।४।
धन्य थीक मिथिला नर - नार ।
जगदम्बा भेली साकार ।५।
अइमँ थिक ई देश महान ।
वेद - शास्त्र सेहो परमान ।६।
ऐतय होइछ रिपुके मर्दन ।
बन्न भेल छल शंकर गर्जन ।७।
याज्ञवल्क्यकेँ यजुके ज्ञान ।
भेल हमर सबकँहि अभिमान ।८।
छला योग - आचार्य जनक ।
क्यो नहि भेला हुनक सनक ।९।
आनो आन प्रौढ विद्वान ।
द गेला अनुपम निज ज्ञान ।१०।
विद्यापतिक समाधिक मन्दिर ।
देआ रहल अछि स्मृति सुन्दर ।११।
जनिका निज भाषा अभिमान ।
निश्चय छथि ओ पुरुष महान ।१२।

गोटागोटि समाधि पजेबा ।
चिकरए करू स्वदेशक सेवा ।१३।
हे स्वर्गत कवि कोकिल ठाकुर ।
बनी हमहुँ निज भाषा चाकर ।१४।
मिथिला अओर मैथिली माथ ।
उच्च करी छोड़ी सब लाथ ।१५।
कान पाथि माँ सुनथु उचती ।
दिन दिन करी अगिलुका विनती ।१६।

सीते सीते सीते !
तोरे आशासँ हम जिवइ छी,
तोहरे आधारेँ धारल प्रान रे ।
दछड़ि अइलहुँ तोहर दोआरि;
हमरा उबारह अपना जानि रे ।१७।
जगत् रूसए तँ रूसए,
तूँ नहि रूसबह हमर माय रे ।
तूँ हूँ जौँ रूसि जइबह;
आन के होएत हमर सहाय रे ।१८।
जड़ी मरी तोर कोर मे,
जौँ पुनि जनमी मात ।
तौँ तोहरे पदरेणुमे;
सदा लोटाबिअ गात ।१९।

गुल्लीक यात्रा

श्रीश्यामानन्द

हम स्वतन्त्रता प्राप्त कयलाक पश्चात् प्रथम प्रार्थना सम्राटक ओतय राजधानी देखबाक निमित्त कयल । राजधानी नगरक नाम छल मौलेन्दु । सम्राट हमर प्रार्थना स्वीकार कय नगरमे छिगछिगिआ पिटवाय सूचना देलथोन्ह जे पर्वतकायक नगर अयबासँ एक घण्टा पूर्व केओ पथपर घरसँ बाहर ने रहय, धार ने बहराय । ओ हमरहु अति सावधानीसँ चलय कहलन्हि जादिसँ ककरहु अभिघात नहि होइक आ ने कोनो घरकेँ धक्का लगइक । नगरक चारूकातक प्राचीर अढ़ाय फीट ऊँच ओ एगारह इञ्च चौड़ा छैक जाहिपर एक घोड़ा-गाड़ी सुन्दर जकाँ चलि सकैत छैक । दस-दस फीटक दूरीपर स्तंभ 'बुर्ज' छैक । हम पछवरिआ सिंह दरवाजाकेँ टपि नगरमे प्रवेश कयल । केवल राजपथपर चललहुँ सेहो बड़े सतर्क भय । उपपथपर तँ अँटवो ने करिहँ । हम केवल फतूही कमीज पर पहिरने छलहुँ कारण कोटसँ मकानक उपरीभागकेँ धक्का लागि जयवाक शंका रहैत । सापक भयसँ जेना लोक नीचहि तकैत चलैत अछि तहिना हमहु नीचहि तकैत चली । मकानक छत पर लोक तँ रहवे करय, खिड़कीओ सभपर लोक भने बैसल रहय हमरा देखबालय । हम ततेक लोक देखल जतेक हम कोनो देशक पैघसँ पैघ नगरमे नहि देखने रही । नगर एकदम चौखूँट प्रत्येक भुजाक प्राचीर पाँचसय फीट नाम । दू राजपथसँ ई नगर चारि भागमे विभक्त अछि । ई राजपथ पाँच फीट चौड़ा अछि । सड़क कलकत्तहुक अनेक सड़कसँ नीक । गलीमे त' जाय नहि सकलहुँ परन्तु देखल जे ओहो सभ नीक परन्तु चौड़ा एक फूटसँ डेढ़ फूट धरि । सफाइ सेहो सुन्दर कलकत्ताक उपपथ ओ गली सभसँ अधिक साफ । नगरक जनसंख्या राज्य गणनानुसार पाँच लक्ष ओ मकान सभ तीनि महलसँ लय पाँच महल धरि । राज-भवन नगरक ठीक मध्यमे छन्हि दू फीट ऊँच प्राचीरसँ घेरल बीस फीटपर । सम्राटक आज्ञालय हम दिवाल टपि हातामे जाय सभ दीसि घूमि राज भवन देखि सकलहुँ परन्तु बाहरसँ कारण भोतर अटितहुँ कोना । प्राचीर (सैरक दिवाल)

पाथरक बनल छन्हि खूब चिक्कन कयल। एकर बाद चालिस फीट लम्बा चौड़ा आँगन छन्हि तकर बाद बाहरी दलान तकर बाद फेर आँगन तखन राज परिवारक रहबाक प्रसाद पँचमहला छन्हि। ओहि दिन दोसर आँगनमे नहि जाय सकलहुँ। कारण पहिल आँगनक बाद जे दलान रहय से पाँच फीट ऊँच। कनितहुँ तँ मकानकेँ धक्का लागि क्षति पहुँचितैक तेँ दोसर दिन फेरि 'सम्राटक आग्रहसँ सन्नद्ध भेल अयलहुँ। तैयारी की कयल तँ सम्राट्सँ दूटा सभसँ पैघ गाछ लेल ओ ओहिसँ दूटा तीनि फीट ऊँच-चौपाह (Stool) बनाओल। सै दुनूटा दुनू हाथमे लय गेलहुँ। बाहरक आँगनमे एक चौरहलख बहरघराकेँ टपि ओहिपारक अन्दरक आँगनमे पहुँचलहुँ। ओहिठाम पड़ि रहलहुँ। दूमहलक खिड़कीसँ भितरकेँ दृश्य देखय लगलहुँ। भवन खूब सज्जित छल राजोचित सामग्री सुन्दर गलीचा, कुरसी, टेबुल अलमारी सभ सँ। एकमे सम्राज्ञीकेँ वालवच्चाकेँ पढ़वैत। हम पड़ले पड़ल दुनू हाथ जोड़ि प्रणाम कयल। ओहो प्रसन्नता सूचक ईषत हास्यसँ अभिवादनक उत्तर देलन्हि। जे बच्चा दोसर दीसि घूमल बैसल छल तकरा हमरा देखओलन्हि। ओहो सभ हमरादीसि निर्भीक भय देखैत बिहुँसय लागल। हमहुँ खुसी-खुसी अपन डेरापर दुनू चौपाइकेँ हाथमे लटकओने फीरि अयलहुँ। हमरा भोजन-पानमे कहिओ किञ्चितो त्रुटि नहि देखि पड़ल। प्रवास-जीवन एक प्रकार सँ वेस वितैत छल।

प्रायः चौदह पन्द्रह दिनुक पश्चात् एकदिन प्रातः काल सम्राटक प्रधान मन्त्री (सेक्रेटरी) हमर भेंट करय केवल एक अंगरक्षकक संग अपन गाड़ीकेँ हमर डेरासँ किछु दूरहि छोड़ि उपस्थित भेलाह। ओ हमरासँ गुप्त वार्तालापक हेतु एक घण्टाक समय मँगलन्हि। हमहुँ तत्काले सहर्ष अपने स्वीकृति जनाओल। कारण ई व्यक्ति एक तँ सम्राटक अपन प्रधान गुप्त मन्त्री (Personal Private Secretary) छलाह दोसर दिनकासँ हम एकाधिक बेरि उपकृत भेल रही। हम हुनका कहलिअन्हि जे हम पड़ि रहैत छी अहाँ हमर काने-लग आवि सभ विषय कहौ। परन्तु हुनक दोसरे विचार भेलन्हि जे हुनका अपन हम तरहत्थीपर उठायकेँ वार्तालाप करी। सैह भेल। हुनका तरहत्थी पर राखि गप्प करय लगलहुँ। हुनक कथनक ई सारांश छलन्हि जे सम्राट् दू कारणसँ चिन्तित छथि। एक चिन्ताक कारण ई छन्हि जे देशमे दूदल

भय गेल अछि । परस्पर एहन असहयोग अछि जे सहयोगक कोन कथा परस्पर वार्तालाप पर्यन्त बन्द अछि । परस्पर विरोध आइ सत्तरि चन्द्र (मास)सँ चलि रहल अछि । एहि दुनू दलक नाम त्रिमक्सम् ओ शल्यम-कसम् थीक । देशमे फूटि होयवाक आदि कारण भेल अण्डा फोड़वाक कारण । पूर्वसँ की सदासँ परिपाटी ई छल जे पैघ सिरा दीसिसँ अण्डाकेँ फोड़िकेँ खाइ । एक गोठ बूढ़ जे सठिआयल रहथि तनिका फुरलन्दि जे छोट दीसिसँ अण्डाकेँ खाइ । हुनक देखादेखी बहुतोक लोक छोट दीसिसँ फोड़ि खाय लागल एहि पर विद्वान्क सभा भेल जाहिमे बूढ़बुढ़ानुस लोकनि सेहो रहथि । ओहिमे बड़े वाद-विवादक उपरान्त ई निर्णय भेल जे यस्मात् हमरा सबहिक ओहिठाम सर्वदासँ जे नियम अण्डा फोड़वाक आवि रहल अछि सैह नोक ओ पैघ । तदनुसार राज्यनियमो बनाओल गेल । बस, विद्रोह उठल सेहो एक बेरि नहि जेना राज्यक इतिहास कहैत अछि । आइ धरि छओ बेरि विद्रोह ओ गृहयुद्ध भेल जाहिमे एक सम्राट्क जान गेल ओ एक राजच्युत भेलाह । ई द्रोह आव राजद्रोहमे पैघ नियमानुसार परिगणित कयल जाइत अछि । देखार रूपसँ आव द्रोह नहि होइत अछि परन्तु ई आगि अद्यावधि मिभायल नहि अछि । दोसर राज्य जे एहि राज्यसँ कोनो प्रकार सँ छोट नहि से तकरासँ प्रोत्साहन ई गुप्त विद्रोही दल पबितहि रहैत अछि । इहो दलसँ प्रोत्साहन पाबि दोसर राज्य एहि देशपर आक्रमण करवाक बड़ पैघ अभूतपूर्व आयोजन कयलक अछि । यैह अपन सम्राट्क दोसर बड़ पैघ चिन्ताक कारण भय गेलन्हि अछि । विपत्ती राज्यक सैन्य-बल किछु संभवतः एहिसँ बढ़ि गेलैक अछि यस्मात् एगारह सहस्रसँ अधिक पराजित विद्रोहीगण विपत्ती राज्यमे शरण नेने छथि । ई बड़े कट्टर दल अछि । मरि जायत एहि दलक लोक परन्तु पैघ सीरा दीसिसँ अण्डा फोड़ब स्वीकार नहि करत । सहस्राधिक मरि गेल ओ जे कहलहुँ अछि कतेक सहस्र घर द्वार सभ छोड़ि पड़ाय दोसर राज्यमे जाय बसल अछि । एहि विषयपर छोट-छोट लेखक कोना बड़का - बड़का पोथा सभ बड़का - बड़का धर्माचार्य लोकनिसँ लिखवाय जनतामे वितरित कयल गेल । सार्वजनिक सभा सभ कय पैघ-पैघ विद्वान्मे शास्त्रार्थ (शास्त्र-विचार) कराय पैघ दीसिसँ मात्र अण्डा फोड़ब उचित से सिद्धान्त भेल । परन्तु विपत्ती दल बड़ हठी अछि । कोनो

तरहें ने मानलक ओ ने मानत तकर संभावना देखैत छी । विद्रोही दलक पक्ष लय दोसर राज्यक सम्राट् सेहो कतेक बेरि कहाय पठओलन्हि जे पुरान युगमे जे आचार-विचार छल तकरा बदलि देब उचित । परन्तु हमरा लोकनिके ई पराजय बूझि पड़ल । हमरालोकनि आओरो कठोर नियम बनाओल जे केओ पैघ दिसिसँ अण्डा नहि फोड़ताह तनिक नागरिक अधिकार छीनि लेल जयतन्हि । एहिपर आइ छत्तीस चन्द्र (मास) सँ दुनू राज्यक पारस्परिक मित्रता टूटि गेल ओ युद्ध होमय लागल । अनेक बेरि युद्ध भेल । किछुमे हमरहु लोकनि पराजित भेलहुँ परन्तु अधिक बेरि विपक्षी पराजित भेल । एहि युद्धमे आइ धरि हमरा लोकनिक चालिस पैघ समुद्री जहाज ओ शताधिक छोट नाओ सभ नष्ट भेल अछि । ओ तीस सहस्रसँ बेसी जलसेनाक लोक नष्ट भेल अछि । शत्रुक अनुमान कयल जाइत अछि जे हमरा लोकनिसँ अधिक जहाज ओ सैन्य नष्ट भेलन्हि अछि । परन्तु तेँ की एहि बेरि बड़ तैयारी कयलक अछि । गुप्तचरक द्वारा खबरि पहुँचल अछि जे शीघ्र आक्रमण होयत । तहिँ सम्राट् हमरा अहाँक ओतय ई समाचारक सूचना दैय पठओलन्हि । अहाँ पर, अहाँक वलपर ओ अहाँक शूरता पर बड़ विश्वास छन्हि ।

एतबहिसँ हम बूझि गेलहुँ जे की अभिप्राय छन्हि । समानमे मित्रता ओ शत्रुता होइत छैक । जहिना बाघकेँ मूससँ लड़ब हास्यास्पद तहिना हमरा ओहि भट-युगो लोक सभसँ लड़ब हास्यास्पद । युद्धमे भाग नहि लैत छी तँ कृतघ्नताक अतिरिक्त शपथ तोड़बाक अपराधी होइत छी । एहन द्विविधामे तीन घण्टाक समय लेल । बेरिखन आवय कहलिअन्हि उत्तरक निमित्त । 'सापो मरय ओ लाठिओ ने टुटय' । सौचैत - सौचैत एकटा सुन्दर उपाय फुरल । उत्तरक हेतु जखन बेरिखन अयलाह तखन हम कहलिअन्हि जे 'हम सम्राट्क सेवा ओ देश-रक्षाक शपथ खयने छी । से हम करै लय प्रस्तुत छी । परन्तु पश्चात् हम अस्थायी छी एहि देशक नागरिक हम युद्धमे प्रत्यक्ष भाग लय अपनासँ शत सहस्रगुण कमवल जीवक असंख्य हत्या करी से उचित नहि । तखन हम देश-रक्षार्थ शत्रुक समुद्रीवल 'वेड़ा'केँ अपहृत कय आनि दैत छी । शत्रु स्वतः बलरहित भय सन्धि कय लेल । एवं प्रकारेण हम हत्योसँ बँचि गेलहुँ ओ देशक भय सेहो दूर भय गेल । सम्राट् हमरापर कृपाकय एतवे सेवा लथु ।' ईहो निवेदन कय देबन्हि जे हमर अछैत देश पर ओ हुनका अपनापर कोनो प्रकारक आपत्ति अयलापर हम प्राणक मोह त्यागि हुनक रक्षा करबन्हि ।

मलाहक टोल : एक चित्र

गीत बन्द क' क' कमली हँसैए लगलि, दासँ मातलि हँसी,
वासनासँ प्रज्जवलित हँसी ओ 'द्रौपदी-चीर-हरण'क नाटकमे
द्रौपदी'क अर्धनग्न शरीर देखि क' दर्शक-गण जेहेन किलोल करैत
छथि, तेहने पिइकी !

मुदा, चनरा' क बाल-सँगो महन्था मरि गेल छल । जीवित छल
मात्र महन्था, जकरा दिस आइ धरि कोनो छी छिनेह'क भावसँ
नइ देखने छल । जीवित छल ओ नर-भक्तक वाव, जकरा
पहिले-पहिल मनुष्य रक्त-पान करवाक अवसर भेटल छलैक ।

पिरितिआ

चनरा मलाह आ महन्था मलाह, दुन्नू बडु पैव मित्र । साते आठ बरख'क
बएससँ संगहि नाहपर मलाही करै छल । संगहि बन्सी ओ खोप ल' क',
तागमे कीड़ा-फटिंगा आ पिल्लू गँथने, माछ मारै छल । संगहि अखाड़ामे
कुश्ती लड़ै, ओ संगहि साँझमे ताढ़ी पीविक' ढोलपर गावै :

‘सब दिन बाजे कोइली भोर भिनसरवा

वैरिन कोइलिआ आजु बाजे आधी रतिया, हो रामा

सूतल पिआ के जगावे, हो रामा

मोरा करेजा जरावे, हो रामा, हो रामा.....’

चनरा मलाह देखवा-सुनवामे बडु सुन्नर । गोर नार, चकैठ' देह, सोंटल
हाथ-पैर, ओ मस्ताएल साँढ़-सन निनाएल चालि ।

महन्था परम कुरूप । विशाल दैत्य सन चाकर आ कारी—भुजुंग । टोल-
पड़ोस'क रसगरि छाँड़ी सभ महन्थाकेँ देखि क' बाजै—बाप रे, एहेन
राच्छससँ कोन मौगी करतइ विआह ? दइआ गे, एक्के पटकनमे त' हाड़-
पाँजर तोड़ि क' राखि देतइ ।

जखन दुन्नू मित्र बीस-पचीस बरख'क छल त' चनरा मलाह'क बाप कमला'
क बाढ़िमे डूबि क' मरि गेलइ । एक दिन चनरा'क माय कहलकइ—

चन्नर बेटा, मालिक त' मरिए गेलउ । आव हमरा स' एसकरि घर-दुआर नइ सभरैत छउ । एगो छौंड़ी विआहि क' ल' आ'...

टोल परहक मलाह सभ'क सरगना, हरखू माँझी'क चौदह-पन्द्रह बख'क बेटी पिरितिआ पर चनराक नजरि बहुत दिनसँ पड़ल छलइ । कतेक बेर पिरितिआ आ पिरितिआक मायकेँ अप्पन नाह पर चढ़ाक' किसनपूरक हाट आ पुपरीक मेला देखा अनने छल ।

एक मासक भितरहि चनरा मलाह आ पिरितिआ माम्निनक विआह भ' गेल । विआहक आठमे दिन पिरितिआ चनराक आङनमे रहवा'क हेतु चलि आयलि ।

बाँसक हरिअर वन्सी-सन पिरितिआ, पानिमे छह-छह करैत कवइ-माछ सन पिरितिआ, कमलाक धारपर उड़ैत चल जाइत छोट-छिन नाह-सन पिरितिआ... पिरितिआ आ चनरा मलाह सन जोड़ी आइ-धरि मलहटोलीमे नइ देखल गेल । पिरितिआक अएवाक दोसर दिन साँझमे महन्था मलाह, सात चुक्री ताड़ीक समर्थ निसामे मातल, दू-टा जोआयल भुन्ना-माछ दुन्नू कान्हपर लदने, चरिखानाक लुंगो आ लाल रंगक मैल गंजी पहिरने, अप्पन बाल-संगीक आँङनमे आएल ।

चनरा आँगनमे वैसल जाल वुनवाक सूर-सारमे छल आ पिरितिआ ओसारा-पर वइसलि आँच जोड़वाक प्रयास क' रहल छलि ।

माछ'क भार आँगनमे पटकि महन्था चिकरल--'पिरती भउजी, जल्दीसँ आँच जोड़ि' माछ वनाव' आइ चन्नर-भाइ खाना-पीना करेतइ !' एकटा माछ हाथसँ उठा' क' तौलइत, चनरा बाजल --'खाना-पीना त' हेवे करेतइ ! मुदा, महन्था, तौ त' हमरा स' दू-मास जेठ छें ? तखन, पिरितिआ तोहर भौजी कोना भेलउ ?'

'जेठ-छोटक बात अखनी जाय दे । पिरित जइसन परीकेँ हम भौजी नइ वनाव त' की अप्पन माय वनाव ? सुन चनरा, जखनि हमहूँ कोनो छौंड़ीसँ सगाइ करव त' तहूँ ओकरा भौजी वना लिहें !' —महन्था हँसैत बाजल । आ, महन्था'क गप्पपर चनराकेँ हँसी लागि गेलइ आ पिरितिआ सेहो हँसै लागलि । पुवरिआ-दिसक घरमे रहैत छलि चनराक' पितिआत वहीन, कमली । विधवा छलि आ सौँसे टोलमे अप्पन तवधल यौवनक हेतु, स्वच्छन्द यौवन-क्रीड़ाक हेतु प्रसिद्ध छलि ।

अपन ओसारापरसँ चिकरलि—चनरा, दारू मँगैबो करबें की खादी बाते बनबैत रहबें ? सगाइ केना आठ-दस दिन भेली, गुदा अखनि तक एको चूल्ह नइ पियैने छें । परसू एक घैल ताड़ी मँगौलें । से समटा अपनि धूनू बैकती पी'क' आँगनमे बिसरि गेलें । इहो नइ भेली जे एक थोड़ ताड़ी गद्दीनी के द' दिअइ ।'

'तोरा कोन कम्मी छौ, बहीन ! रोजे त' कैथ—दोली'क झँझा-सम संगे ताड़ी-दारू पिबै छें ओ...!' महन्था माछ उठा' क' ओसारापर ल' जाइत बाजल ।

कमलीकेँ क्रोध भ' ऐलइ । आँगनमे उतरैत बाजलि—हम रंग-रमस करब त' की तो करबें ? भगवत्ती हमरा मुँह-कान देने अछि,...तोरा भगवत्ती की देने छौ ?...जो, जो, तों हमरासँ की बजबें !

कमली'क क्रोध शान्त करइत चनरा कहलकइ—बहीन, तों चुप रह । देखै नइ छही, महन्था पीने बुत्त छइ । तों चुप रह । दारू मँगवै छी त' तहू पिबिहें !

जखन, दारू पीबा'क निमन्त्रण पाबि कमली चुप्प भ' गेलि, त' चनरा पिरितिआसँ बाजल—माय त' माछ ल'क' हटिया गेल छइ । बड़ी रातिखन घुरतइ । हमरा संगेमे पइसा छइ कहाँ ! दारू कोना एतइ ?

स्नेहपूर्ण शब्दमे पिरितिआ नहूँ-नहूँ बाजलि—हम्मर बाँसबला पौतीमे दस-बारह-गो चानीक रुपैया छइ आ एकटा दसटकही नोट छइ । नोट बहार क' क' दारू मँगलू । हम माछ तरि लै छी । माछ'क संगे दारू'क सुआद खूब होइ छइ !

दसटकही नोट ल'क' चनरा कलाती-भट्टो दिस बिदा भेल, आ महन्था कमली'क ओसारापर जा' क' कमलीसँ गप्प करै लागल जे परसू रातिमे बाधसँ अबैत काल कोना बनैआ सुगर ओकरापर छरपलइ आ कोना ओ दू घंटा धरि बरछीसँ सुगरपर प्रहार करैत रहल आ फेर कोना सुगर जंगलमे पड़ा गेलइक ।

जखन चनरा आठ बौतल, सत्तरि नम्बर'क दारू ल' क' आँगन आयल त' सौंसे आँगन तरल जाइत माछ'क सुगन्धिसँ मह-मह क' रहल छल । पिरितिआ आँगनमे बइसलि कमली'क ओसारा दिस ताकि क' हँसि रहल छलि ।

आ ओसारापर कमली'क जाँघपर मूड़ी रखने चिचिआ-चिचिआ क' गावि रहल छल महन्था.....

चनरा आ चनरा'क हाथमे दारू'क बोतलसँ भरल मोटरी देखि क' कमली सोम्के ओसारासँ कूदि क' आँगनमे चल आयलि ।

गीत बन्द क' क' महन्था चिकरल—तों राजा छें, चनरा !

आ, तुरते सर्वहारा-वर्ग'क मोहफिल आँगनमे जमि गेल ।

बीचमे माछ'क भरल बासन आ मड़ुआ'क रोटी'क थारी आ दारू'क बोतल, आ एहि भोजन'क चारू कात सटिक' बैसल चनरा आ पिरितिआ, आ महन्था आ कमली ।

जखन, देसी दारू'क चारिम बोतल सधि गेल त' कमली बाजलि—महन्था, तों हीरा आदमी छें । हम तोरेसँ सगाइ करव । हमरा सन भौजी तोरा दोला भरिमे नइ भेटतउ ।

पिआसल आँखिसँ पिरितिआ दिस तकैइत महन्था बाजल—तोरामे की हीरा ठोकल छौ, कमली । हमर पिरित भौजी सन छौँड़ी अइ परगन्नामे नइ छइ । अप्पन पत्नी'क प्रशंसा सुनिक' चनरा हँसै लागल—महन्था, तोरा सन दोसर हमरा किओ नइ भेटत । तों जे कहवें हम क' सकैइ छी ।

पिरितिआ चुपचाप माँछसँ काँट छोड़ा-छोड़ा क' चिबवैइत रहलि ।

माछक काँट दाँत तर कड़ कड़वैत चनरा मुदित हृदयसँ बाजल—बहु निम्नन माछ बनलइ आइ । पिरितिआ, तोरा सन माछ माइओ नइ बनवैए । महन्थाके' त' पहिनहिंसँ ताड़ीक निशा छलइ । दारूक सातम बोतल लग अवैत-अवैत त' ओ पागल कुकुर जकाँ भसिआए लागल । कमली सेहो एक-दम्भ माति गेल छलि ओ ठाढ़ि भ' क' नाचि-नाचि क' गावि रहल छलि :

चानी के बन्सी मे बाकल रे राजा

सोना के मछरिआऽ

सोना के मछरिआ, सोना के मछरिआऽऽ

राति नइ मानैए ककरो डर भय

दिन नइ बूझै, नाचै निरभय

पिआ सँग गेलै, पिआ सँग खेलै,

.....

अकस्मात्, भीम-गर्जन करैत महन्था चिकरल—चुप भ' जो कमली, नइ त' कपार फोड़ि देबौ ।

आँ, महन्था पिरितिआ' क हाथ पकड़ि क' अपनौँ दिस धिचै लागल । पिरितिआ चिचिआय लागलि, मुदा महन्था' क हाथ लोहाक हाथ छलइ ।

गिलासक दारू मुँहमे ढारि क' चनरा बोजल—महन्था ! ई की करइ छे' ?

गीत बन्द क' क' कमली हँसै लागलि, दारूसँ मातलि हँसी, वासनासँ प्रव्वलित हँसी आँ 'द्रौपदी-चोर-हरण' क नाटकमे द्रौपदीकेँ देखि क' दर्शकगण जेहेन किलोल करैत छथि, तेहने पिहकी ।

चनरा चिकरल—महन्था, पिरितिआ' क हाथ छोड़ि दही, नइ त हम जान मारि देबौ !

मुदा, चनराक बालसंगी महन्था मरि गेल छल । जीवित छल मात्र महन्था जकरा दिस आइ धरि कोनो स्त्री सिनेह' क भावसँ नइ देखने छलइक । जीवित छल ओ नर-भक्तक बाध, जकरा पहिले पहिल मनुष्य रक्त-पान करवाक अवसर भेटल हो ।

कमली दूनू हाथसँ थपड़ी पाड़ैत, आर जोर-जोरसँ गाबैए लागलि :

राति नहि मानै हो दिन नहि मानै

पिआ सँग सूतै हो दिअर सँग सूतै

दिअर सँग सूतै.....

महन्थाक मुँहसँ 'लार' चूबि रहल छलइ । आँ पिरितिआ महन्था' क बाँहि मे आबद्ध छलि आँ आतंक सँ चिचिआ' रहल छलि आँ रावण' क बाँहिपर आँ गरदनिपर दाँत काटि रहलि छलि । आँ, महन्था पिरितिआकेँ उठा' क' ओसारा दिस ल' जैवा' क प्रयत्न क' रहल छल । कोनमे राखल कुड़हड़ि उठा क' अर्ध - विक्षिप्त चनरा महन्था दिस दौगल । कमली चिकरलि—महन्था, सम्हरि जो, सम्हरि जो महन्था ।

चोटायल साँप जकाँ घूमि क' महन्था तकलक आ ठामहिँ ओसारापर पिरितिआकेँ पटकिकेँ, चनरा दिस घूमल । पिरितिआ बहु प्रयत्न कएलक जे उठि क' कतउ भागि जाइ, मुदा, एक्को डेग घसकि नइ सकलि । दारू'क बेहोशी, शरीरक । (ओ भय-आतंक ।

महन्था घूमल त' चनरा दुन्नू हाथे कुड़हड़ि उठौने दू हाथ पर ठाढ़ छल । सनकल हाथी जकाँ महन्था चिकरल—चनरा ! आ, चनरा कुड़हड़ि चलविते ताहिसँ पहिनहि उछलि क' चनरा' क शस्त्र छीनि लेल' क । फेर, ओकर दहिना हाथे चनरा' क गरदनि पकड़ि क' ओकरा ओसारा परसँ धकेल देल' क । भीम सन महाबली महन्था' क वज्र प्रहार चनरा साहि नइ सकल । ओसारा परसँ सोमे चित्त भ' क' आँगन मे राखल भाछक वासनपर खसल । माथ फूटि गेलइ आ छर्र-छर्र सोनितक धार आँगनमे बहै लागल । कमली चिकरलि—बाप रे ! खून भेलइ रे, चनरा मरलइ रे ! आ अपनहुँ खसि क बेहोश भ' गेलि ।

रातिक दू पहर बीति चुकल छल आ बीस - पचीस घर क' मलह - टोलीमे किओ जागल नइ छल जे कमली क' चीत्कार सूनि क' दौगल अवितै । चनराक हाथसँ छीनल कुड़हड़ि फेकि क' महन्था पुनः ओसारापर पड़ल, कनैत, चिचिआइत थर-थर करैत पिरितिआ केँ पाँजमे उठा' लेल' क, जेना कोनो अवोध शिशु सड़कपर पड़ल कचकड़ा' क खेलौना उठवैत हो । आँगनमे चित्त खसल अप्पन पतिकेँ देखि क' पिरितिआ केँ कोनो प्रतिरोध करवाक साहस नइ भेलइक ।

तीन - चारि घंटाक पश्चात जखन भसिआइत डेगे महन्था घरसँ ओसारा आ ओसारासँ आँगनमे आयल त' चनरा के होस भ' गेल छलइ आ ओ चुक्की-मुक्की भ' क' बैसल बोड़ी पीबि रहल छल । कमली के जखन होश भेल छलइ त' ओ पानि आनि क चनरा' क माथ धो देने छलइ आ बोतल बचल दारू ढारि क चनराकेँ पिआ देने छलइ ।

महन्था आँगनमे आवि क ठाढ़ भ' गेल । चनरा अनासक्त भावें बोड़ी सोंटि रहल छल, जेना किछु भेले नइ हो ।

कनिहँ काल'क बाद पिरितिआ बहराइलि आँ महन्था'क पाछूमे ठाढ़ि भ' गेलि । आँ, विषाक्त दृष्टिहँ अप्पन स्वामो दिस ताकै लागलि ।

एक मिनट धरि चनरा दिस ताकि क' बिना किछु बजनहि, महन्था आँगनसँ बहार भ' गेल । महन्था'क पाछू-पाछू बिदा होबै लागलि पिरितिआ ।

पिरितिआकेँ आँगनसँ बहराइति देखि, ठाढ़ होइत चनरा मलाह चिकरल—
‘पिरितिआ, तों कत्त’ जाइ छै ?” व्याधा’क बन्दूक’क गोली खा’ क’ जेना
क्रुद्ध बाधिन व्याधा दिस तकैत अछि, तहिना घूमिक’ पिरितिआ बाजलि—
हम महन्था’क आँगन जाइत छी ! जखन तोरा सोझामे, तोहर आँखि’क
सोझामे महन्था हम्मर धरम ल’ लेल’क, इज्जति लूटि लेल’क आ तों ओकरा
किछु नइ’क सकले, त’ हम्मर मालिक केहेन ? तों हमरा अपना आँगनमे
राखै बला के ? महन्था मनुक्ख नइ थीक, राच्छस थीक । मुदा, ओकरा
सोझामे हम्मर देह पकड़बा’क साहस त’ ककरो नइ हेतइ । महन्था तोरा
सन अब्बल त’ नइ अछि ! हम जाइछी महन्था’क घर रहइले । आइसँ
ओ हम्मर मालिक थीक । काल्हिए हम ओकरासँ चुमाओन क’ लेव । खाली
हाथे पकड़िक’ बिआह क’ लेलासँ घरवाली नइ घरमे रहइ छइ । घरवाली
रहइ छइ रच्छा कएलासँ । तों त’ हिजड़ा छै चनरा !

एतवा कहि, पिरितिआ चनरा’क आँगनसँ बहार भ’ गेलि । चनरा ठामहिं
वैसि रहल आ गिलासमे बचल दारू पीबिक’ कमलीसँ बाजल—बहीन,
एगो बीड़ी छै ? कमली चनराकेँ बीड़ी द’ क’ आँगनसँ बहराएलि आ
देखलक—आगू-आगू महन्था ओ पाछूसँ पिरितिआ मलाह’क टोल’ क
अन्हार गलीमे चलि जा रहल अछि ।

कमली घुरि क’ आँगनमे आएलि त’ चनरा तन्मय भ’ क’ बीड़ी सोंटि रहल
छल । कमली बाजलि—चन्नर, आव सूति रह’ । बडु राति भेलइ ।

कमली

बाबू, पानि पीब ! बाबू हउ, पिआस लागल अछि ! बाबू हउ !! —सुन्दर
मलाह’क दस-एगारह बखँक बेटा, लखना एतवा कहि क’ बेहोस भ’ गेल ओ
बाँस’क खाटसँ खसि क’ धरतीपर पड़ि रहल ।

लखनो आइ आठ-दस दिनसँ मलेरिया-रोगसँ पीड़ित अइछ । पहिने
जखन लखना नाह घाटपर बान्हि, आँगन आएल छल त’ माय’क कोरामे
खसि पड़ल आ बरए लागल छल—माय, आव नइ बचबउगे ! आदि-

आदि । त' सउँसे देह जरइत छलइक । मायकें भेल छलइक जे लखनाकें भूत-तूत लागि गेल छइक । तहँ, दू दिन धरि निरसू भगता लखनाकें भाड़इत रहल आँ दू-सेर चाउर, सबा-टा रूपइआ, धूप-धूमन, दू गज नव कपड़ा अप्पन धर ल' गेल ।

मुदा, लखना'क बोखार आ डिलिरियम बढ़ितइ गेलइक । तखन, सुन्दर गेल गाम'क धन्वन्तरि, वैद्यराज चक्रपाणि मिसरकें प्रार्थना-पाँती क' क' अन आँगन अनल'क चक्रपाणि मिसर'क दबाइलँ सेहो कोनों लाभ लखनाकें नइँ भेलइक । लखनाक माय'क चानी'क सूइति बन्धक धरा देवा'क पश्चात् वैद्यराज बजलाह—रोग कठिन थीक । अस्पताल'क डाक्टरसँ चिकित्सा कराएब आवश्यक थीक ।

तखन, फाटल सीरकमे बेटाकें लपटि क' सुन्दर मलाह, तीन कोसपर स्थित सरकारी अस्पताल ल' गेल । भोरसँ बारह बजे दिन धरि अस्पताल'क ओसरापर बेटाकें कोरमे लेने बइसल रहल तखन चपरासी सुन्दरकें बजओलक । लखना'क जीह, आंखि, पेट देखवा'क बाद डाक्टर साहेब कहलथिन—हम मिक्सचर दावाइ लीख दिआ है । मगर, दावाइ से फायदा नहीं होने सकेगा । दुन्नू हाथसँ डाक्टर'क पएर पकड़इत सुन्दर कानए लागल—सरकार, हमर एक्के-टा बेटा अइछ । सरकार, एकर जान बचा दिअउ सरकार...

हामारा पएर छोड़ो । पएर पकड़ने से क्या होगा । तुम्हारा लड़िका को इन्जेक्शन लगेगा, तब ठीक होगा । अइसे ठीक नहीं होने सकेगा । इन्जेक्सन अस्पतालमें नहीं मिलता है । बाजार से खरीदने होगा । लड़िका को सेलेब्रेल मलेरिया है । इन्जेक्शन को दाम लगेगा बाइस रूपिआ दू ठो सूइ लगेगा । फेर सूइ लगाने का फीस होगा बारह रूपिआ । तुम काल्ह पैंतीस-ठो रूपिआ लेकर आओ । लड़िका ठीक हो जाएगा ! —एतबा कहि क' डाक्टर नर्ससँ गप्प करए लागल ।

पनिसोह दबाइ'क सीसी आ रुणा पुत्रकें लेने साँभ खन भूखल-पिआसल, आँगन आएल । सामली (अथवा श्यामली, सुन्दर'क पत्नी) लखनकें पुआर'क ओछाओनपर सुतबइत बाजलि—डाक्टर बाबू की कहलथिन ।

छँउड़ा बचि जपतइ ने ? हताश भावें आकासदिस तकइत सुन्दर उत्तर
 देलकइक—६'-गो सूइआ पड़तइ तब अचछा हेतइ । सुइआकेँ दाम लगतइ
 पैतिस-गो टाका । मुदा; घरमे त' आव आठो आना पाइ नइ छइ । तोइर
 सूइति छलइ, सेहो बन्हकी धरा गेल । आव रुपइआ कहाँ से अओतइ ?
 सामली किछु नइ बाजलि । बजबा'क रहबे की करइ । सुन्दर केँ हाथ-मुँह
 धोएबा'क हेतु पानि देलकइकि ओ आगूमे चाउर'क चारि-टा मोट-मोट रोटी
 ओ दू-खण्ड माछ; पनिआइ भोरमे डूबइत दू-खण्ड माछ राखि देलकइकि ।
 समयक पनिआइ भोरमे डूबइत दू-खण्ड माछ, सामली ओ सुन्दर ! विचित्र लीला !
 दोसर दिन भोरे कन्हापर अप्पन हाथ ओ परिश्रमसँ बनाओल जाल ध'
 क' सुन्दर माछ मार चल गेल । रस्ता भरि सोचइत रहल—जँ आइ एकटा
 बड़का रहु भेटि जाए । बड़का रोहू, मनुक्खसँ चारि-गुना पइघ रोहू । ओ,
 तखन ओ रोहू पुपरी'क हाटपर पचास - टाकामे बिका जाए

मुदा, अपनहि बिचारपर जेना सुन्दरकेँ हँसी लागि गेलइक—पचास-टाका'
 क कत्तउ एकटा माछ भेलइए !

मर्य्यक'क प्रथम किरण-जाल बड़का महाराजी पोखरिकेँ क्रमशः उज्जर, पीअर,
 लाल रंगमे रंगि रहल छल । ओ, सुन्दर'क मत्स्य-जाल अभ्यस्त हाथ'क
 भटका पावि वायुमे पसरिकेँ पोखरि'क पानिपर खसइत छल—छपाक !
 डाँड़-भरि जलमे ठाढ़ भेल सुन्दर, ओकरे हाथमे नचइत माछ'क जाल ओ
 पानिमे छह-छह करइति मत्स्य-राशि—भुन्ना, रोहू, कबइ, माँगुर, बोओरी,
 गरइ, इचना ओ सितुआ, घोंघा, घास-पात ।

जखन, सुन्दर दसम बेर जाल फेकल'क त' दू-तीन-टा छोट-छोट रोहू ओ
 एकटा पइघ भुन्ना, आठ-दस टा बोओरी ओ दू-तीन सेर'क करिव घोघा
 सुन्दर'क लगमे जमा भ' गेलइक ।

दूपहर'क दस-एगारह बाजल हेतइक । जाल समेटि क' कान्ह पर राखि,
 जालमे छटपट करइत माछ सभ'क सुख-स्पर्श पीठ पर अनुभव करइत, सुन्दर
 अप्पन टोल दिस बिदा भेल । विचारल'क—घोंघा ओ छोटकी इचना-सभ
 सामलीकेँ पकबइक हेतु द' देबइक ओ बचल माछ ल'क' चल जाएव हाट
 पर । कम्म सँ कम्म छः—सात टाका'क प्रबन्ध त' भइए जाएत ।

रस्तेमे भेट गेलथिन—गोराइ चौधरी, गाम'क मुखियाजी । सौम्य-खन मत्स्य-मौस'क भोज छइन, सउँसे गामकेँ नोत देने छथिन । छागर'क प्रबन्ध त'भ' गेल छइन । मुदा, बयाना ल'क' महन्था मलाह धोखा द' देलकइन । एखन धरि आँगनमे एको-टा माछ नई पहुँचल छइन । महन्था दारु पीने मस्त भेल आँगनमे सूतल अइछ ।

सुन्दर बाजल—मालिक, माछ त' हम सभटा द' दइत छी । मुदा, हमर बेटा वेराम अइछ । दबाइ लेल एको टा पाइ नई अइछ । छ-गो सुइआ लगइत ओकरा । अपने मोछ'क दाम द' दिअ' । माछ देवा'मे हमरा कोनो उजुर नई !

हँ रे, सुनरा ! माछ लेबउ त' दाम किअएक नई देबउ ? तो चल हमरा आँगन ! — गोराइ चौधरी कहलथिन ।

मुदा, जखन माछ गोराई बाबू'क स्त्रीकेँ द' क' सुन्दर दलान आएल त' गोराइ बाबू'क कत्तउ पता नई । हुनकर बेटा बाजल—'बाबू त' गुअरटोली चल गेला दूध आनइ लेल, बड़ी काल धरि गुअरटोली ओ सउँसे गाममे गोराइ चौधरीकेँ ताकि' सुन्दर आँगन चल आएल ।

आँगन आएल त' देखल'क लखना धरती पर चित्ते खसल, बेहोस अइछ ।

कनिहँ काल'क बाद ओखि फुजलइक, त' लखना चिकरल—बाबू, पानि पीब । पानि पीब... ओ तखनई, सामली'क सँगें कमली ओ पिरितिआ आएलि ।

पिरितिआ बाजलि—सुन्नर-भइआ, लखना वेराम छइ ओ तों हमरा कहबो नई कएल !

सामली लखनाकेँ पानि पिआ'क' ओछानपर सुताब लागलि ।

जखन, सुन्दर सामलीकेँ माछ'क हाल, गोराइ चौधरी'क ठकपनी'क हाल सुना चुकल, त' घर'क देहरिपर बइसि, कपारपर हाथ ठोकिक' सामली एतवै बाजलि—हे भगवती, लखना नई बाँचत ।

कमली लखना'क माथ पर हाथ राखिक' स्पर्श कएलक—तीव्र ज्वाला । बाजलि—बड्ड बोखार छइ । मुदा सामिली-भउजी, तों चिन्ता जुनि कर' । लखना नीकेँ भ' जएतउ ।

कनी काल धरि सोचबा'क बाद पिरितिआ बाजलि—सुन्नर-भइआ, हमर घरबला त' दू बोतल दारू पीबिक' सूतल अइछ। गोराइ बानू जे माछ'क लेल वेआना देलखिन, तकर दारू कीनिक' पी लेल'क ओ आँगन आबि'क लहास जकाँ पड़ि रहल। मुदा, तों निफिकिर भ' जा' भइआ, हम हुनका उठा' क' सब हाल कहइत छिअइन। ओ अवस्स कतउ-ने-कतउ सँ रूपइआ'क ठेकान क' देतइ। हमरा ओकरापर विस्वास अइछ।

कमली'क गरदनिमे चानी'क मोटगर सूइति चमकि रहल छलइक। दुन्न हाथ सँ पकड़िक' सूइति बाहर करइति बाजलि—काल्हिए-खन तिरपित मिसर ई सूइति सोनरवासँ गढ़ाक' देने अइछ। खू भरिगर छइ। कम्मो-सँ-कम्म बीस-पचीस टाका दाम अवस्स हेतइ। तों ई सूइति त्रेच लोब' !

गरदनि सँ सूइति बहार क'क' कमली सुन्दर'क हाथपर राखि देलकइक।

निस्वार्थ स्नेह'क एहेन सौम्य - प्रदर्शनसँ सुन्दर भाव-विह्वल भ' गेल। पाछू हटइत बाजल—नइँ, नइँ, कमली, कमली, तोहर गहना बेचि क' हम लखना'क दबाइ नइँ कराएब। लखनाकेँ बचबा'क हेतइ त' तोरा सभ'क आसीरवादे सँ बचि जाएतइ। मुदा, तोरा त' घरोबला नइँ छउ यएह गहना-गुरिआ त' आगू काज देतउ।

देह-दसा रहत त' कतेक सूइति फेर गढ़ालेब, सुन्नर ! मुदा, लखना के सइआ नइँ पड़तइ त' ओ हाथसँ चल जाएत ! तों कोनों चिन्ता नइँ कर'। एहेन वेरमे की गहना'क मोह कएल जाइत छइ ?—कमली'क एहि प्रश्न'क उत्तर सुन्दर नइँ द' सकल।

लखना'क मोथपर हाथ फेरिक' कमली ओ पिरितिआ आँगनसँ बहार भ' गेलि। कमली कोनो गीत गबइति कलाली दिस बिदा भेलि ओ पिरितिआ गेलि अप्पन आँगन दिस महन्थाकेँ जगएबा'क हेतु।

साँझ भेला सँ पहिनइँ, महन्था पन्द्रह-टा टाका ल'क' सुन्दर'क आँगन पहुँच गेल। सूइति बेचला' सँ सेहो वाइस-टा टाका भेटि गेलइक।

ओ,

तखन, लखनाकेँ कन्हापर लादि महन्था अस्पताल दिस बिदा भेल। पाछू-पाछू चल'ल सुन्दर ओ सामली।

कलाली लग आपल त' मतल्ला देवता'क, कामली'क, चारि'वी'वन्दा सगल
मेरचे छल आ दाशमे दार'क मोलन बलने कामली चारि'वन्दा'क सगल बलन
छलि ।

'हम त' मल्लादिन राजा, जल के मल्लिआ
जलके मल्लिआ राजा, जलके मल्लिआ
आपल मल्लादिन, पैकल मल्लादिन पैकल
मल्ला - जल राजा, हमारा मल्लादिन ।'

केतकी

पाँच बरख'क बाद तुरन्ता मौसमी मोरंग सँ घुरि क' गाम आपल त' मल्लाह'
क टोल'क सभ स्त्री - पुरुष केँ तुरन्ता'क भाग्य पर बहु करपा भेलइक ।
कारण, तुरन्ता मल्लाह'क दुन्नु पाएर मे लकवा मारि देने छलइक ।
तुरन्ता'क पितृआइनि बाजलि — कोनो छान्न बात चला देसे हतइ । हम
पहिनई कहइ छलिअइ, तुरन्ता मोरंग नई जो । अपन गाम - घर छोड़ि
क' जएबा'क फज्र थएह होइ छइ । सगल मल्लाह दिनाजपुर गेल से आइ
धरि घुरि क' नइ आएल । छनितवा धानुक चाह - बगान मे नउकरी कर'
गेल त' ओतइ सौंफ काटि लेलकइ, मरिष गेल । मुदा तुरन्ता केँ त' छलइ
जे मोरंग मे रूपइआ पानि जकाँ बरिसइ छइ...

हमरा त' लगइए जे आन केतकी की करतइ । जेचारी के कसम फुटि गेलइ !
—सहानुभूति प्रकट करइति पिरितिआ बाजलि ।

करतइ की ! दोसर सगाई क' लेतइ । तुरन्ता मे की सोना भौंथल 'छइ'
जे ओकरे संग लागल रहतइ केतकी ! —बड़गामबाली छतर लेलकइक ।

आँ, अहिना मल्लाहटोली'क इनार पर बड़ी काल धरि तुरन्ता मल्लाह ओ
ओकर स्त्री, केतकी'क दुर्भाग्य पर चर्चा ओ टीका-टिप्पणि होइत रहल ।

केतकी तुरन्ता'क सँगहि मोरंग गेलि छलि ओ सँगहि घुरि क' गाम आपलि
अइछि । मोरंग जाइत काल केतकी बारहे-तेरह बरख'क छँडइ छलि । मुदा
पाँचे बरखमे एकदम बढ़लि गेलि अइछि । मात्र देहे-बसा नई, नूआ पहि-
रबा'क ढंग, बाजल-भूक'व'क ढंग, रस्ता-बातपर नूआ फलका' क' बलबा'

क ढंग, सभ किछु बदलि गेल छइक । आँचर मे कुर्सी'क भन्वा बान्हइति अइछि, ढाँड़ मे सदिखन रुमाल काँचने रहइति अइछि, दिनमे दू बेर क' पान खाइति अइछि, नित्य भोरे उठि क' पोखरि सँ नहा अबइति अइछि आँ ब्रह्म—बाबाक थान पर फूल चढ़वइति अइछि, आदि—आदि ।

केतकी'क रंग-ढंग देखिक' टोल'क बूढि-पुरानि मलाहिन सभ नाकपर हाथ ध' क' बजइति अइछि—साँए त' आँगन मे पड़ल एक लोटो पानिक लेल चिचिआइत रहइ छइ आँ केतकी एक खिल्ली पान खा' क' बरइसँ हँसी-ठट्टा करइति रहइ अइछि ! इहो छँउड़ी गाम भरिमे कमलिए जकाँ नाम करत ।

मुदा,

ओहि दिन साँफ खन् कमली माछ ल' क' तिरपित मिसर' क आँगनमे गेल त' मिसरजी एकान्ती मे ल' जा' क' कहलथिन—कमली, एक दिन केतकी सँ भेंट नई करा देबें ?

त', हँसइति कमली उत्तर देलकइनि—मालिक, केतकी आँ हमरा मे बड्ड फरक छइ । केतकी अहाँ केँ हाथ नई लागत । परसू - खन लखमन बरइ एकरत्ती केतकी के हाथ छू देलकइ, तइ पर ओ छउँड़ी ततेक हल्ला केल'क जे सउँसे गाम वहीर भ' गेल । माय गे, ओ छउँड़ी छइ, की आगिक लुत्ती । मालिक, अहाँ केतकी के खिआल मोन सँ हटा' लिअ' । आन जइ छँउड़ी द' कहूँ, हम नई, नई कहब । मुदा, केतकी ? बाप रे बाप रे, ई काम हमरासँ नई हएत !

कमली, आइ धरि हम जेहि मउगी पर दाँत गड़ेने छी, से हमरा लग अबस्स आएल अइछ । ई केतकी जँ आइ सँ एक्को मास धरि एहि गाम मे रहत त'..."—

एतवा कहि क' घर दिस बिदा भ, गेलाह ।

तिरपित मिसर एहि गाम'क रावण छइथ । कतेक सीता' क सतीत्व-भंग क' चुकल छइथ, से अपनउँ नई मोन छइन । बेसी धनीक त' नई छइथ, मुदा प्रतापी बड्ड पइघ । भाँग'क गोला पचवइ मे, बनइआ सुगार'क सिकार खेलाइ मे, कुश्ती लड़इ मे, घोड़ा फनवाई मे आँ सउख-मउज करइ मे हिनकर बराबरी करइबला एहि परोपट्टा मे किओ नइ ? गाम'क स्त्री-जाति'क हेतु त' तिरपित मिसर साक्षात इन्द्र-भगवान छइथ । प्रति वर्ष गाम'क कतेक विधवा, सधवा, सधवा कुमारि हिनका सँगें सिमरिआघाट गंगास्नान करए जाइति छइथि ।

मुदा,

हिनका मलाह-जाति क' स्त्री किछु विशेष रूपसँ पसिन्न छइन् । कहइत छइथ-
धरती पर'क असली अप्सरा त' मलाहिने होइति अइछि । अप्सरा माने
पानि मे रहइवाली । मलाहिन'क गत्र-गत्र सँ जे मछाह सुगन्धि बहरावत
छइक, तहि सँ नीक आन कोनो वस्तु नई । महर्षि पाराशर, महर्षि व्यास
आँ सम्राट शान्तनु सन लोक की मूख छलाह जे मलाहिनसँ बिआह
कैरलइन् ?

आँ,

ओहि रातिसँ तिरपित मिसर 'केतकी-हरण'क सरंजाम करए लगलाह ।

दोसर दीन भोर मे केतकी धार'क कात, माछ आनए गेलि त' चनरा मलाह
नाह ल' क' ओइ पार जाइत छल । केतकी कें देखितहिं बाजल—भउजी,
पार जएबें ?

केतकी चुपचाप आवि क' नाह मे बइसि गेलि आँ चनरा नाह खेबए लागल ।
जोर जोर सँ लगा चलवइत चनरा बाजल—भउजी, एक बात कहिअउ ?
की कहवें ?

तों हमरा सँ चुमाओन क' ले । तुरन्ता सँगे रहि' क की भेटतउ ? ओ त'
आव दू मुटो भातो नई जुमा सकतउ । तों हमरा संगे बिआह क' ले । तों
जे-जे कहवे, सएह हम करबउ ।

बिआह' क गप्प नई कर, चन्नर ! जखनि धरि हमर घरबला जीबइए, हम
चुमाओन नई करब ! ओ हमरा भात नई देत, त' हम ओकरा भात जुमा'
क' आँ पका' क' देबइ ।

तों केहेन पागल छें भउजी, खाली भातेसँ की काज चलि जएतउ ? आर
की कथूक मोन नई हेतउ ?

'हमरा मोनके फिकिर तों किअएक करइ छै ? तो अप्पन मोन के कर । पिरि-
तिआ-सन छँउड़ी नई सँभरलउ त' हमरा कोना सँभारिके रखबें ?
पिरितिआ त' छिनारि छल ।

'ओ छिनारि छल तई तोरा छोड़ि देलकउ । मुदा, चन्नर, हम छिनारि नई
छी, आँ तई हम अपना घर-बालाके नई छोड़ब । टोलमे त' पचास-छा जुआन
छँउड़ी छइ । तों ककरो सँ क' ले बिआह !
तों नई करवें ?

हमरा की घरबला नई अइछ, जे हम बिआह करब ? —एतवा पूछिक'
केतकी नाहपर सँ उतर' लागल । नाह घाट पर लागि चुकल छलइक ।

सब दिन ई शान नई रहतउ, केतकी, ओ ने ई सरीर ओ देह—दसा रहतउ । तखन किओ पुछबो नई करतउ ! —नाहसँ उतरिके लग्गा नाहेपर फेंकइत चनरा बाजल ।

‘हम्भर देह-दसा’क फिक्किर तोरा किअएक छउ, चन्नर ? सरीर की ककरो सब दिन साथ देलकइए ? तोंहीं की सब दिन एहने रहवें ? देह संग नई दइ छइ, मुदा मोन त’ सब दिन संग दइ छइ चन्नर ! ओ हमरा ई विश्वास अइछ जे हम्भर मोन कहिओ अप्पन घरबलासँ नई हटि सकत ! जहिआ ओ समंगर छल, जहिआ ओ चारि पइसा कमबइत छल, तहिआ हमरा इन्दर भगवान’क परी जकाँ सजा क’ रखल’क, सब सुख देलक । जे नूआ-बस्तर ओ गहना कहलिअइ, सएह कोनि देल’क । एहेन लोककेँ हम छोड़ि क’ दोसरासँ सगाइ क’ ली ? ई हमरासँ नई हएत ! हँ, एकटा बात’क मोन लगले रहि गेल । कोरामे एकटा नेना के नई पोसलउँ । से की सब मछगीकेँ धिआ-पुता होइते छइक ? —एतवा कहिक’ केतकी नाह परसँ छरपिकेँ उतरल ओ घाट दिस चल जाइति रहलि ।

केतकी मलाह-जाति’क स्त्री भ’क’एतेक पति-भक्ति ओ धर्मपर विश्वास रखइत अइछि, ई आश्चर्य’क विषय थीक । साधारणतः त’ छोट-जाति’के लोक, दयनीय आर्थिक स्थिति’क लोक, विना कोनो सपन्न सामाजिक स्थिति ओ सुदृढ़ धार्मिक आस्था’क लोक चरित्र, नैतिकता, सम्बन्धी’क स्नेह, कर्तव्य-भावना आदिस वंचिते रहइत अइछ ।

केतकीकेँ त’ ई बुझलो नई हएतइक जे पर-पुरुष’क संगे रति-विलास कएनाइ किअएक अधलाह मानल गेल अइछ ।

मिथिला’क धानुक, कहार, ततमा, मलाह, गोंड़ि, पासी आदि अनेक शूद्र ओ शूद्रेतर जाति’क लोक एखन धरि आदि-कालीन जीवन, यौन-स्वच्छन्दता’क जीवन, अज्ञान ओ अन्धकार’क जीवन, दीनता ओ परतन्त्रता’क जीवन बिता रहल छइथ । एखन धरि शूद्रेतर जाति’क युवती ब्राह्मण ओ क्षत्रिय जाति’क भोग-वस्तु मानल जाइत अइछ । ‘राइक मउगी, सभ केर भउजो’; एखनधरि...

मुदा,

केतकी मोरंग घूमिक’ आएल अइछ । केतकीकेँ बारहे-तेरह बरख’क अवस्थासँ कोनो मालिकक सेवा करब नई सिखाएल गेल छइक । जेना राजर्षि जनक’क सभामे याज्ञवल्क्यसँ शास्त्रार्थ करइति विदुषी गार्गी, तत्कालीन आस्था’क विरोधिनी, विद्रोहिणी छलीह—खोआसँ भरल पइघ बाटी सनि, रूप-रस यौवन सँ भरल चम्पा-कली सनि केतकी मलाह-समाज’क जीवन-क्रम ओ आस्थाक विरोधिनी, विद्रोहिनी अइछि ।

क
घे
छ

परम वृद्ध हरखू मांझी नहुँए स्वरमे बाजल—कपारपर मरल-सन रोगी तुरन्ता बइसल छइ । कत्ते दिन धरि केतकी दाइ देह सँभारने रहतीह । दू कर भातक लेल लोक के की की ने कर' पड़इ छइ ।

तुरन्ताके' स्नान भोजन करएलक, अपने दू-टा रोटी पेटमे राखलक, फेर एक गट्टा बीड़ी आनिके' तुरन्ताके' देलक आँ तबन, ओसारापर कुनियाँ भ' क' सूति रहलि ।

आँ, तहियासँ नित्य रातिमे तिरपित मिसर तुरन्ता माँझीक घरक चारुकात टहल मारए लगलाह ।

कमली'क द्वारा तिरपित मिसर केतकीके' दूटा पँचटकहो नोट पटेलथिन, मुदा, कमली नोट लेने घुरि अएलइनि । कहलकइनि—अहूँ खूब छी, मालिक, हमरा ओइ छउँडी क हाथे' मारि-गारि खाइ लेल पठवए छी ! अहाँके' हम पहिनहि कहलउँ । मुदा, अहँके' त' केतकी'क भूत लागि गेल अइछि त...

मिसरजीक आकर्षण आर बढ़ि गेलइन । रातिमे एगारह बजे तीन चिलम असली नेपाली गाँजा पोबि क' आँ हाथमे गुप्तो लागल लाठी ल' क' आँगनसँ बहराएलाह । सीताके' कोनो लक्ष्मण रेखा नइ वचा सकत...

तुरन्ता माँझीक आँगनमे मात्र डेढ़ टा कोठलो छलैक एकटा सँउस घर जइमे सुतइत अइछ आँ दोसर ओसाराक एकचारी, जत्त भानस होइत छइक आँगनमे भाँग'क जंगल छइक आँ दू दिससँ आँगन कत्तउ कड़चीक टाटसँ घेरल छइक । जखन मलह टोल' क कुरुर दबाइलकइन त' तिरपित मिसर अन्हारमे दउगइत दउगइत आबि क' तुरन्ता' क आँगनमे भाँगक मध्यमे ओंघड़ा' क' खसि पड़लाह धमाक !

तुरन्ता घरमे फौफ काटि रहल छल आँ केतकी ओकर बाम भागमे पसरलि छलि, जगले, निन्न नइ होइत छलइक । मिसरजीक खसवाक शब्द सुनि क केतकी बहराएलि । ई ओकरा बूझल छलइक जे तिरपित मिसरके' रातिमे निन नइ होइत छएन आँ तइ, मलहटोलीमे पहरा दइत रहइत छइथ ।

हाथमे दूहाथक फराठी ल' क' केतकी ओसारापर बहराएलि आँ चिकरलि—आँगनमे के थीक ?

गाँजाक उन्मादमे हेराएल तिरपितमिसर विचारलइन—आवनुकाएव व्यर्थ थीक । केतकी कुरुर नइ थोक जे काटि लेत । आँ, तुरन्ता त' उठिओ नइ सकैत अछि । बजलाह—हम छी ! केतकी, इम्हर आ' तोरासँ जरुरी काज अइछ !

केछ' तों ? कोन काज छइ ?—तिरपित मिसरक स्वर चिन्हि क' केतकी बाजलि । हमरा नइ चिन्हइत छे', हम छी तिरपित !

हमरासँ कोन काज अइछ ?

ओसारापरसँ की वजइ छे' ? इम्हर आ' । तिरपित मिसर ओसाराक कोर लग आबिके' बजलाह आ जावत् केतकी पाछाँ हटए तावत् ओ केतकी के हाथ पकड़िके' ओकरा आँगनमे घोचि लेलइन ।

[शेष कवर पर]

का
वे
छ

चन्द्रमाक प्रकाशमे मिसरजीकेँ केतकी ओहि कालमे संसारक सभ स्त्रीसँ
वेसी सुन्नर लगलइन ।

हाथ छोड़एबाक असफल चेष्टा करइत केतकी बाजलि—मिसरजी, आव
ओ जमाना नई छइ, जे अहाँ जे चाहब से क' लेब । हम गरीब छी, मुदा
रंडी नई छी । अहाँ अपना आँगन जाउ, हमरा जा क' सूतए दिअ' ।

मुदा तिरपित मिसरक लाल आँखि देखि क केतकी के बडु डर भ' गेलइक ।
सँउसे देह सिहरि गेलइक । चारू कात भाँगक चारि पाँच हाथ उँच जंगल
आँ जंगलक बीचमे केतकीक दून्नू हाथ पकड़ने एहि क्रममे अभ्यस्त तिरपित
मिसर लाठीमेसँ गुप्ती बहार क' क' चम-चम करइत धार केतकीकेँ देखबइत
मिसरजी बजलाह — केतकी जँ एक्को रत्ती हल्ला करवे' त पेटमे सँउसे गुप्ती
भोंकि देबउ !

केतकी ने चिकरलि, ने कानलि, ने हल्ला करबाक चेष्टा कएलक केवल तिर-
पित मिसरक दिस ताकि क हँसलि । फेर कनिए काल घर दिस ताकि क'
बाजलि—मिसरजी अपन गुप्ती लाठीमे ध लिअ । हम त अहाँसँ हँसो करइत
छलउँ । हम अहाँसँ बाहर जाएब त एहि गाममे रहि सकब ।

मिसरजीक हाथसँ दसो टाका ल' क' केतकी आँगनक दोसर कात टाट
लग चलि गेलि । पाछू-पाछू गेला मिसरजी । मुदा रुपइया ल' क' केतकी
भागि नई जाए एवं हल्ला नई करय लागए एहि हेतु मिसरजी फूजल गुप्ती
लगेमे रखलइन आ' पिआसल बड़द जकाँ केतकीक पान सन पातर ठोरपर
अपन तमाकूसँ पोअर दाँत रगड़य लगलाह । चुम्बनक ई प्रक्रिया समाप्तो
नई भेल छल कि दहिना हाथसँ गुप्ती उठा क' मोरंगक छँउड़ी केतकी सँउसे
गुप्ती तिरपित मिसरक पेटमे भोंकि देलकइनि ।

मिसरजी चिकरलाह—माए गे ! माएSS गेSSS ! आँ केतकी'क छातीपर
खसि पड़लाह । हुनकर रक्तसँ पानि'क भरना जकाँ खसइत रक्तसँ केतकी'क
आँगी आँ छाती आँ सँउसे देह आँ मुह भीजि गेलइक । देहपर पड़ल
तिरपित मिसरकेँ धरतीपर ठेलि क' केतकी उठि क' ठाढ़ि भ' गेल । फेर
बड़ी काल धरि ठाढ़ि भेलि मरइत अथवा मरि गेल तिरपित मिसरकेँ देखइति
रहलि...